संगीत

श्रीगणेश संगीत

आड़ाना—दादरा

१

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव।
माता तोहे पार्वती, पिता महादेव॥
मोद मन भेद हरे उमा की गोद भरे।
कार्य सब सफल करे देवाधिपति देव॥
दुःख-हरण, विघ्न-नाशन, मंगल-करण।
आये हम तेरी शरण, देवन् के देव॥

२

मनोहर साही—एकताला

गिरिगणेश आमार शुभकारी।
पूजे गणपति पेलाम हैमवती,
चाँदेर माला पैनो चाँद सारि सारि॥
विल्ववृक्षमूले पातिया बोधन,
गणेशेर कल्याणे गौरीर आगमन
घरे आनबो चण्डी, कर्णे शुनबो चण्डी
आसबे कतो दण्डी जटाजूटधारी॥
मायेर कोले मेये दुटी रूपसी
लक्ष्मी सरस्वती शरतेर शशी

सुरेश-कुमार गणेश आमार
तादेर ना देखिले झरे नयनेर वारि ॥

३

विघ्न-हरण गौरी-नन्दन
पूर्ण-करण सर्वकाज ।
दयावन्त एकदन्त
चतुर्बाहु सिद्धिराज ॥

■

श्रीगुरुसङ्गीत

१

जय गुरुदेव दयानिधि भकतन के हितकारी ।
जय जय जय मोह-विनाशक भव-बन्धन-हारी ॥
ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव का गुरु मूरती- धारी ।
वेद पुरान करत बखान, गुरु की महिमा भारी ॥

जप-तप-तीरथ-संयम-दान, गुरु बिना नहीं होवत ज्ञान ।
ज्ञान संग से करम काटे गुरु नाम सब पातकहारी ॥
तन-मन-धन सब अर्पण कीजे, परमा गति मोक्षपद लीजे ।
सबके सार सत् गुरु नाथ अविनाशी अधिकारी ॥

२

(आमि) वन्दि तोमारे गुरु ॥ टेक ॥
तुमि ये आमार सुधार सिन्धु
आमि ये तृषित मरु ॥

हे मोर जीवनेर ध्रुवतारा ।
(आमि) आँधारे आँधारे घुरिया घुरिया हयेछि ये दिशेहारा

तुमि ज्ञानेर प्रदीप लइया ।
'भय नाइ'—बले पथ देखाइया ।
आमे आगे याओ फिरे फिरे चाओ ।
बुझिया आमाय भीरु ॥

(तुमि) आमार परम बन्धु,
(आमार) बत अनादर लओ समादरे

अपार दयार सिन्धु।
देखिते आमार पाओ नाक दोष
नाहि अभिमान नाहि तव रोष
सदा हासिमुख प्रशान्त सुमुख
हे आमार आश्रय तरु॥

(तुमि) अन्तरेते मम प्राण
(आबार) बाहिरेते तुम विश्वरूप धरि
रहियाछो दृश्यमान।

तुमि-इ आबार देहधारी हये
करो अभिनय देही मोरे लये
नमि विश्व-प्राण, करो परित्राण
हे आमार कल्पतरु॥

३

(गुरु) तोमार आमि, तोमार आमि, तोमारइ तो आमि।
गुरु आमि रथ, तुमि रथी, आमार सकल काजेइ तुमि साथी।
तोमार बले सबाइ चले, यैमन चालाओ तुमि।
(गुरु) तोमार आमि.....

आमार प्राण तुमि, प्रिय तुमि, भक्ति तुमि, मुक्ति तुमि।
आमार माता पिता बन्धु भ्राता आमार सकलि तुमि।
(गुरु) तोमार आमि.....

वारि विना मीन यैमन गुरु तुमि छाड़ा आमि तैमन।
प्राणे कतोइ ज्वाला याय कि बला जानो अन्तर्य्यामी।
(गुरु) तोमार आमि.....

तुमि छाड़ा के आर आछे आमार या सब तोमार काछे।
आमार साधन तुमि, भजन तुमि, तुमि हृदय-स्वामी।
(गुरु) तोमारि आमि..... .....

लता यैमन तरु घिरि, जड़िये अंगे तारि।
गुरु तेमनि मतन हृदय-रतन जड़िये आछि आमि।
(गुरु) तोमारि आमि..... .....

तोमार धने आमि धनी, तोमार ज्ञाने आमि ज्ञानी।
गुरु आमार आमि तोमाय दिये तोमार हलेम आमि।
(गुरु) तोमारि आमि..... .....

४

ओगो दिन तोमार आनन्दे याबे जप्ले गुरुर नाम,
जपो जपो गुरु नाम॥

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु शिवराम,
गुरु सेवाय मिले, मोक्ष-धर्म-अर्थ-काम॥
मेघ-वरण मुरली मोहन वंशी-वदन श्याम,
यमुना-पुलिने बसे जपेन सदा गुरु-नाम;
सार करो सद्गुरु वाक्य, पूरबे मनस्काम;
(तुइ) आपन घरे आपनि गिये देखबि आत्माराम॥

पूरबी—कहारवा

५

गाह रे गाह रे सबे गुरु-ब्रह्म नाम हे॥ (टेक)
ऐ नामे लभिबे भाई, चिदानन्द धाम हे॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु अपार प्रेम-सिन्धु,
गुरु नारायण शम्भु, गुरु मातापिता हे॥

एसो प्रभु परात्पर, डाके तोमाय चराचर,
हृदय,कमले बसो, एसो प्रभु एसो हे ॥

मालकोष—तुलताल

६

मेरी लागी लटक गुरु चरणन की।
चरण बिना और कछु नहीं ध्यावे
झूठी माया सब स्वपनन की ॥
भव-सागर-जल सूख गया है
फिकिर नाहीं मोर तरणन की।
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर
पुलक भयी मोरे नयनन की ॥

बाउल

७

ओ भाई गुरुइ कर्णधार।
ओ भाई काज की रे तोर अपर काजे
ए माया-नदी पार हइते गुरुइ कर्णधार।
पूर्ण विश्वास एले भाई
(देखबि) गुरु बिना ए जगते आर तो किछुइ नाइ,
पारापार थाकबे ना आर
घुचबे रे मनेर विकार।
देखबि रे एइ हृदय-पुरे
(तखन) काली कृष्ण शिव ये गुरु
गुरुमय ए संसार।
गुरु माफी हये आछेन पारघाटे
ओ ताँर कृपा होले याबि पारे तरबि संकटे।

ओ भाई आसल समय केउ कारो नय
ओ भाई गुरु बिना सब आँधार।
ओ भाई गुरुइ कर्णधार ॥

८

मन तुइ शुधु बेये या रे दाँड़।
(यखन) तोर हाले बसे आछेन गुरु
(तखन) यैमन फागुन तैमन आषाढ़ ॥

माझीर ऐ गानेर ताने
बेये या रे दाँड़ आपन मने
(आर) चास ना रे तुइ आकाश पाने
होक ना फर्सा, होक आँधार ॥

काज कि भेबे कोथाय याबि
कोथाय गिये नाथ भिड़ाबि (रे)
कखन गाङे लागबे घाटि (रे)
कखन गाङे लागबे जोआर
से सब भावना कैनो आर ॥

मने राखिस निरवधि
याँर-इ तरी, ताँर-इ नदी
ये फेलवे तोरे बानेर मुखे
से-इ तो तरीर कर्णधार।

९

परब्रह्म-रूप गुरु करुणा-निधान।
चिर पूज्य हे उज्ज्वल मुक्त महान ॥

दुर्गम पथ अति घन तमसाय,
चलिबो संसार-पथे कौन भरसाय;
आमाय निये चलो साथे साथे
तव परिचित पथे,

कलुष विनाशि प्रभु दाओ हे कल्याण ॥
कुटिल कुयासा घेरा पथ-सीमाना,
आँधारे चलिबो कोथा नाहि ठिकाना;

आमार कैमने घुचिबे आधि,
तुमि ना देखाबे यदि

चिर उदार उन्नत चरण-निशान ॥
आँधार संसारे तुमि आलोक-रेखा
पथहारा पथिकेरे दिबे कि देखा

आमाय दाओ पथ-परिचय
हे चिर मंगलमय;
राखो हे गौरव तव ओहे गरीयान ॥

१०

भैरवी-कौवाली

गुरु नाम करो साधना करो साधना।
ये नामेते पाप काटे घुचे भव यन्त्रणा।

गुरु-नाम सार करो श्री गुरु बलो बदने।
गुरु-रूप ध्यान करो शान्ति पावे जीवने।
भुलेओ भुलो ना यैनो श्रीगुरुर ऐ श्रीचरण।

ये चरणे कोटि चन्द्र जेनेओ कि ता जानो ना।
दुर्लभ जनम पेये की की कार्य करेछो।
जन्म हले मृत्यु आछे भेवे कि ता देखेछो।
दिन थाकिते डाको तारे नइले देखा पावे ना।

११

मनोहरसाही—एकताला

जानो ना रे मन परम कारण श्रीगुरु-चरण भरसा रे।
श्रीगुरुसर्व-सिद्धि-दाता परम देवता दीन जने दीन-तारण रे।
निस्तार करिते एइ संसार-तुफाने, पथ देखाइते प्रेमेर भवने।
ज्ञान भक्ति प्रेम सदा लभिबारे श्रीगुरु-चरण करह सर्वस्व रे।
मन तुइ पाबि अनायासे चतुर्वर्ग फल भव-मरु माझे छाया सुशीतल
श्रीगुरु-चरण-कमले भक्ति-गंगाजल सयतने करो सिञ्चन रे।

श्रीराम सङ्गीत

१

प्रेम-मुदित मन से कहो राम राम राम
श्रीराम राम राम श्रीराम राम राम।
पाप कटे दुःख मिटे, लेते राम नाम
भवसमुद्र - सुखद - नाव एक राम नाम॥
परम - शान्ति - सुख-निदान नित्य राम नाम
निराधार को आधार, एक राम नाम॥

परम गोप्य परम इष्ट मन्त्र राम नाम
संत हृदय सदा बसत एक राम नाम ॥
महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम
काशी - मरत मुक्त - करत कहत राम नाम ।
माता - पिता - बन्धु - सखा सबहि राम नाम
भकत - जन - जीवन - धन एक राम नाम ॥

२

तिलक—कामोद एकताला

रघुकुलपति रामचन्द्र अवध के अधिकारी
सुर-नर-जन पूजे चरण, मुनि-जन-भयहारी ।
झलके अरुण वदनकमल, नील-पद्म नयन युगल
दशरथसुत सीतापति तपोवन - वनचारी ॥
सत्यधर्म पालक प्रभु राज - मुकुट - त्यागी
रत्नाकर - शासक प्रभु अनुजके अनुरागी ॥
शिला-सती अहल्या-त्राता जगत-पूज्य जगत-पिता
लङ्कापति - मोक्षदाता असुर - निधन - कारी ॥

३

झिँझिट खाम्बाज—एकताला

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया ॥
किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लपटाय
धायी मातु गोद लेत दशरथ की राणीया ॥
अञ्चलरज: अङ्गझारि विविध भाँति सों दुलारि ।
तन-मन-धन बारि बारि कहत मृदु वाणीया ॥

विद्रुम-से अरुण अधर बोलत मुख मधुर-मधुर ।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनिया ॥
तुलसीदास अति आनन्द, देखत मुखारविन्द ।
रघुवर छवि के समान रघुबर छवि बाणियाँ ॥

४

झुमुर—खेमटा

कष्ट हरण तेरा नाम राम राम हो
कमल नयन वाले राम श्रीराम हो ।
(अहा) कष्टहरण तेरा नाम (राम हो)
चन्दन चमकत ललाट, कानों में कुण्डल-बहार
बस गई मन अनमन ॥ कमलनयन वाले राम ॥
नवदूर्वादल-श्याम तनमनहारी
(अहा) देखत वनवासी उमङ्ग भरि
ऐसो मनहरण ठाम ॥ कमल नयन वाले राम ॥
जय जय दीनदयाल, जय जय राघव कृपाल
मुकुट-शीर्ष चन्द्रभान ॥ कमल नयन वाले राम ॥

५

सुना रे सुना रे मन अमृत भरा है रामचन्द्र का नाम
(मनुआ) रामचन्द्र का नाम ।
जनम जनम भर राम नाम कर
पूरत मन का काम ॥

सीताराम, सीताराम, बोल बोल सीताराम।
(मनुआ) बोल बोल सीताराम।
नारायण नर भेष बनावे
श्रीरामचन्द्र इह जग में आवे
अपार लीला जगको दिखावे
भजते रहो राम नाम॥
सीताराम सीताराम बोलो बोलो सीताराम।
—मनुआ बोल बोल सीताराम॥

६

मुझे रामसे कोई मिला दे।
बिन् लाठीका निकला अन्धा,
राम से कोई मिला दे॥
कोई कहे बास अवध में
कोई कहे वृन्दावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
देखा साहु मैं उनको मन में।
ऐसे जोत जगा दे॥

७

भैरवी—कहारवा

(मन) नाम जपन क्यों छोड़ दिया?
राम जपन क्यों छोड़ दिया?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया?

झूठे जग में दिल ललचाकर
असल रतन क्यों छोड़ दिया?
कौड़ी को तो खूब सम्भाल
लाल रतन क्यों छोड़ दिया?
जिन्हि सुमिरण से अति सुख पावे
सो सुमिरण क्यों छोड़ दिया?
खालस एक भगवान भरोसे
तन-मन-धन न क्यों छोड़ दिया?

८

काफी—त्रिताल

(मनुआ) राम नाम रस पीजे।
त्यज कुसंग सत्संग बैठ नित
हरि - चर्च्चा सुन लीजे॥
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह को
चित से बहाय दीजे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
ताँहि के रङ्ग में भीजे॥

९

माड्

पायोजी मैं तो रामरतन धन पायो।
वस्तुआ मोरिको दी' मेरे सतगुरु
किरपा कर अपनायो॥

जनम - जनम की पूँजी पाइ
जग में सभी खोयाओ,
खरच न कोई, वाको चोर न लूटै
दिन दिन बढ़त सवाओ ॥

सत की नाव खेवटिया सतगुरु
भव-सागर तर आयो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
हरख हरख जस गायो ॥

१०

जय जय रामसीया, रामसीया, रामसीया राम ॥ टेक ॥
सीयाराम ही आधार, जाने सारा संसार
देखो दिल में विचार ॥
उनकी महिमा अपार, कोई पावे न पार
गुण गावें हजार ॥
हरण धरणी के भार लिये नर के अवतार
भजो दशरथ-कुमार ॥
काने कुण्डल विशाल तिलक शोभे जाके भाल
लटपट पगिया रसाल ॥
श्रीदशरथ के लाल कोशल - पालक कृपाल
राजीव लोचन विशाल ॥

११

जय सीतापति सुन्दरतनु प्रजारञ्जनकारी ।
राघव रामचन्द्र जयतु सत्यव्रतधारी ॥

धरणी पूतचरण परशे, पुरवासीगण मगन हरषे ।
आकाश हइते नित्य बरषे देवता-कृपावारि ॥

१२

जगत् देखो ना चेये याच्छे बेये सोनार तरणी ।
तरीर ऊपर श्याम कलेवर राम रघुमणि ॥
(यिनि) भवेर जले अवहेले करेन जीवे पार ।
आजके ताँरे निच्छि पारे हये कर्णधार ॥
(आमि) पारेर कड़ी चेये नेबो (श्री) चरण दुखानि ॥

१३

राम राज बैठे त्रैलोका । हरषित भये गये सब शोका ॥
बैर न कर काहूसन कोई । राम प्रताप विषमता मोई ॥
सब निर्दम्भ धरमरत पुणी । नर अरु नारी चतुर सब गुणी ॥
सब गुणज्ञ पण्डित सब ज्ञानी । सब कृतज्ञ नहीं कपट सैयानी ॥

राम राज नभगेश सुनु, सचराचर जगमाहिं ।
काल कर्म सुभाव गुण कृत दुख काहुँ हि नाहीं ।

नमामि भकत-वत्सलं, कृपालु-शील-कोमलं—नमामि ।
भजामि ते पदाम्बुजं, ह्रियकामिनां-सुधामदं—नमामि ।
नवीन - मेघ - सुन्दरं, भवाम्बुनाथ-मन्दरं—नमामि ।
प्रफुल्ल - कञ्ज-लोचनं, मदादि-दोष-मोचनं—नमामि ॥

१४

बोलो बोलो राम नाम जो है, नाम वही प्रेम
वही राम सुख धाम बोलो बोलो राम
जो देखो सो राम ही राम जो करो उन्हीं का काम ।
दीन-दयाल भकत-पाल उन्हीं को करो प्रणाम ॥

१५

राम नाम धन श्याम शिव नाम सुमरो दिन रात
हरि नाम सुमरो दिन रात।
जनम सफल तू कर ले अपना मान ले मेरी बात।
धन्य धन्य वह भूमि प्रभु ने लिया जहाँ अवतार।
धन्य है वह स्थान जहाँ प्रभु-प्रेम का ही परचार।
धन्य है तीरथ जिनकी यात्रा मुक्ति की है बात।
काम क्रोध मोह लोभ छोड़कर नाम उसका गा ले।
मानुष तन जो पाया उसका सच्चा लाभ उठा ले।
जीवन है अनमोल तिहारी पल पल बितत जात॥

१६

रघुवर तुमको मेरे लाज
सदा सदा मैं शरण तिहारी।
तुम ही गरीब-निवाज।
पतित-उद्धारण बिरद तुम्हारो
श्रवण न सुनि आवाज।
है तो पतित पुरातन कहिओ, पार उतार जहाज।
अघ-खण्डन दुख-भञ्जन जनके एहि तिहार काज।
तुलसीदास पर कृपा कीजे भकति दान देहुँ आज॥

१७

अब मैं अपने राम रिझाऊँ
गङ्गा जाऊँ ना यमुना जाऊँ ना कोई तीरथ नहाऊँ।
तीरथ है मन के अन्दर वहीं में मलमल नहाऊँ।

डाली तोड़ूँ न पत्ती तोड़ूँ न कोई जीव सताऊँ।
पात पात में प्रभु बसत हैं वही को शीष नवाऊँ।
योगी बनूँ न जटा बढ़ाऊँ न अङ्ग विभूति रमाऊँ।
जो रंग रंगे आप विधाता वही रंग चढ़ाऊँ।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो आवागमन मिटाऊँ॥

■

श्रीनारायण संगीत

१

भैरवी—कहारवा

ए दुनिया एक भुलानि माया
चुन चुन गाड़ा महल बनवाया लोग कहे घर मेरा।
ना घर मेरा, ना घर तेरा, चिड़िया रहन बसेरा॥
नारायण की भक्ति बिना को उतरे भव पार रे।
एक बार हरिनाम ले पाप होयेंगे छार रे।

देश—त्रिताल

२

भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण को नाम रे।
नारायण के नाम बिना तेरे कोई नहीं तो काम रे॥
जीवन है सुख-दुख का मेला
दुनियादारी स्वपनो का खेला
जाना तुझको पड़े अकेला
चल ईश्वर को धाम रे।

नारायण की महिमा गा ले
प्रेम की उसमें रोक लगा ले
जीवन अपना सफल बना ले
भजत रहो हरि नाम रे ॥

३

नारायण जपो मन ।
युगे युगे यिनि हन अवतार
मुछाते व्यथार नयनेर धार
यतो गुरु भार तोर वेदनार
बलो तारि से पातकी-तारण ।
पद-नखे यार नियत उजल
कोटि रवि शशि करे झलमल
ओरे भोला तोर शुधु सम्बल
अमल कमल से टूटि चरण ।

४

नारायण मैं शरण तुम्हारी
दया करो महाराज हमारे ।
तात-मात-सुत-दार-सहोदर
कोई न आवत काज हमारे ॥
भव-सागर जल दुस्तर भारी
तुम्हारे चरण जहाज हमारे ।
पाप अनेक किये जग माहीं
तुमको है अब लाज हमारे ॥
ब्रह्मानन्द दया तुम्हारी से
सब दुःख जावत भाज हमारे ॥

५

जय जय सुर नायक, जन सुख दायक, प्रणत पालक भगवन्ता ।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारी, सिन्धु सुता प्रिय कन्ता ॥
पालन सुर धरणी, अद्भुत करणी, मर्म न जाने कोई ।
जो सहज कृपाला, दीन दयाला, करहु अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनाशी, सर्व घटवासी, व्यापक परमानन्द ।
अभिगत गोतीता, चरित पुणीता, माया रहित मुकुन्द ॥
जोहि लागि विरागी, अति अनुरागी, विगत मोह मुनिवृन्दा ।
निशि-वासर ध्यावहिं, हरि गुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा ॥
जोहि सृष्टि उपायि, त्रिविध बनायि, सङ्ग सहाय न दूजा ।
जो करहुँ आधारि, चिन्ता हमारी, जानिए भक्ति न पूजा ॥
जो भवभय भञ्जन, मुनि मनोरञ्जन गञ्जन विपति वरूथा ।
मन वचन क्रमवाणी, छाड़ि सयानि, शरण सकल सुरयूथा ॥
शारद श्रुति शेषा, विषय अशेषा, जा कहुँ कोई नहीं जाना ।
जेहि दीन पियारे, वेद पुकारे, द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव वारिधि मन्दर, सब विधि सुन्दर, गुण मन्दिर सुखपुञ्ज ।
मुनि-सिद्ध-सकल सुर, परम भयातुर, नमत नाथ पदकञ्ज ॥

■

श्रीकृष्ण-संगीत

१

एसो गोपी-वल्लभ, एसो देव दुर्लभ
एसो हरि वनमाली वङ्किम-श्यामे ।
एसो प्रेममय, एसो दयामय,
एसो तुमि वन्दित वन्दना गाने ॥

एसो लक्ष्मी-विमोहन, नित्य निरञ्जन
गोलोक - उज्ज्वलकारी ।
एसो भक्त-प्राणधन, गरुड़-वाहन
शत्रु विमर्दनकारी ॥
एसो विपद-वारण विपद-नाशन
विपद-भञ्जन नामे ॥
एसो लहरे लहरे अन्तर-माझारे
स्वच्छ आलोक महिमा ।
एसो सजीव-सचल वास्तव मूरति
सुरभित प्रवाहित गरिमा ।
एसो झंकारे झंकृत, मूर्च्छना पूरित
अमरा-अमित करुणा ॥

२

राग छाया टोरी—त्रिताल

मेरे घर आवो प्रीतम प्यारा ।
तुम बिना सब जग हारा
तन-मन-धन सब भेंट धरूँगी
भजन करूँगी तुम्हारा ।
तुम गुणवन्त सुसाहिब कहिए
मोहे अवगुण सारा ।
मैं निर्गुणी कछु गुण नाहीं जानूँ
तुम हो बगसन हारा ।
मीरा कहे प्रभु कबरे मिलोगे
तुम बिन नैन दुखारा ।

३

ओ आमार प्रणेर ठाकुर,
आज तोमारे आसते हबे, बासते हबे भालो ।
एसो आमार पराण-प्रिय, हृदय करि आलो ।
डाकले तुमि आसबे बले,
सेइ ये हरि गैले चले,
(आर एले ना, एबार एसो, एसो हृषीकेश)
(एबार) सोहाग भरे काने काने एइ एसेछि बलो ॥

४

अन्तर - मन्दिरे जागो जागो
माधव कृष्ण गोपाल ।
नव अरुण सम जागो हृदये मम
सुन्दर गिरिधारी लाल ॥
नयने घनालो व्यथार बादल
जागो जागो तुमि किशोर श्यामल ।
लये राधा वामे एसो व्रजधामे
एसो हे व्रजेर राखाल ॥
यशोदा-जीवन एसो, एसो ननीचोर
मीरार प्रीतम एसो, एसो हे किशोर ।
श्रीराधार प्रियतम एसो अनुपम
एसो हे गोठेर राखाल ॥

५

जागो जागो शङ्ख - चक्र - गदा , पद्मधारी !
जागो श्रीकृष्ण कृष्णा तिथिर तिमिर अपसारि !

डाके वसुदेव देवकी डाके
घरे घरे नारायण डाके तोमाके
डाके बलराम, श्रीदाम, सुदाम
डाकिछे यमुना वारि ॥

हरि हे तोमाय सजल नेत्रे
डाके पाण्डव कुरुक्षेत्रे
दुःशासन-सभाय दौपदी डाके
डाकिछे लज्जाहारी ॥

महाभारतेर हे महादेवता
जागो जागो आनो आलोक वारता ;
डाकिछे गीतार श्लोक अनागता
(हरि) डाकिछे विश्वेर नरनारी ॥

६

भजन—कौवाली

पीतम प्यारे वंशीवारे तू आ जा कन्हैया आ जा।
लेई गोवाल-बाल नन्दलाल मोहन मुरली ध्वनि धुन सुना जा ॥

मैं गोवर्द्धन में जाऊँ श्याम मैं गोवर्द्धन में जाऊँ।
वनकुञ्जन बाट यमुनाजी के घाटपे आके गौया चराया ॥

टेर कदम के नीच में सखा संग नाना खेलन धूम मचाय जा।
भूख लगे तो माखन-मिश्री मेरे ही हाथ से खा जा ॥

दधि-दूध-मलाई लेत चलूँ तू आ जा हो मेरे राजा।
दास विश्वरूप तोहें विनति करतु है श्यामल सूरत देखा जा ॥

७

भैरो—त्रिताल

जागो मोहन प्यारे ;
साँवरि सूरत मोरे, मन भावे सुन्दर लाल हमारे।
प्रात समे उठ भानु उदय भयो
गोवाल-बाल सब भूपत ठाड़े
दरशन के सब भूखे-प्यासे उठ उठ नन्द-किशोरे ॥

८

मम मन मन्दिरे रहो निशिदिन
कृष्ण मुरारी, कृष्ण मुरारी।
वन्दना गाने तव बाजुक जीवन वीण ॥
(मम) भक्ति प्रीति माला चन्दन
तुमि निओ हे निओ चित नन्दन
जीवन मरण तव पूजा निवेदन
सुन्दर हे मनोहारी ॥

(एसो) नन्द-कुमार आनन्द-कुमार
हबे प्रेम-प्रदीपे आरती तोमार
(मम) नयन-यमुना बहे अनिवार
तोमारि विरहे गिरिधारी ॥

९

पिलु—कहारवा

आवो सुन्दर श्याम गिरिधारी।
आवो नन्दलाल, आवो व्रजगोपाल
बजाओ मोहन बाँसुरी ॥

प्रीतम कानु आवो व्रजकुमार
तुँही प्रभुजी कंस को संहार
दिखाओ मोहन रूप मीरा के प्रभु
चक्र-सुदर्शन-धारी ॥
गले में दोलावत वन फूल माला
शिर में शिखी नन्द कि लाला
चरण बढ़ाओ प्रभु राखो शरण
गिरिधर नागर मीरा की ॥

१०

झुमुर

नन्द-दुलाल आय रे आय, (ऐ देख) गोठेर बैला जाय ।
(आय) चूड़ा बँधे चाँचर केशे, राखाल-वेशे
नूपुर परे पाय ॥
(आय) वेणु लये हाथे, आय धेनु लये साथे ।
(तोर) पथे पथे कृष्णकलि अञ्जलि छड़ाय ॥
(तोरे) राखाल वेशे करबो राजा साधेर वृन्दावने ।
बसिये देबो तमाल-तले मयूर सिंहासने ।
(आर) कृष्णचूड़ार मुकुट गेंथे पराबो माथाय ॥

११

कौसी कन्हाड़ा—त्रिताल

कोई कहिओ रे प्रभु आवन की !
आवन की, मन भावन की ।
अपने आप लिख नहीं भेजे
बान परि ललचावन की !

ए दो नयन कहा नहीं माने
नदीया बहे जैसे सावन की ।
क्या करूँ कछु नहीं वश मेरो
पाँख नहीं उड़जावन को ।
मीरा कहे प्रभु कबरे मिलोगे
चेरी भई हूँ तेरे दाँवन की ॥

१२

झिंझिट—दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ।
शंख-चक्र-गदा-पद्म कण्ठमाला होई ॥
तात मात भ्रात बन्धु अपनो न कोई ।
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई ।
सन्तन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ।
छाड़ देइ कुल की कान क्या करेगा कोई ॥
अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बीज बोई ।
मीरा प्रभु लगन लगि, जो होय सो होई ॥

१३

कीर्त्तन—खेरा

हे माधव, बहुत मिनति करि तोय ।
देइ तुलसी तिल, देह समर्पिलु दया जनु न छोड़बि मोय ॥
गणइते दोष, गुणलेश न पाओबि जब तुहुँ करबि विचार ।
तुहुं जगन्नाथ जगते कहायसि, जग बाहिर नहिं मुँई छार ॥

किये मानुष पशु पाखी किये जनमिये, अथवा कीट पतङ्ग ।
करम-विपाके गतागति पुन पुन, मति रहु तुआ परसंग ॥
भणये विद्यापति अतिशय कातर, तरइते इह भवसिन्धु ।
तुआ पद-पल्लव करि अवलम्बन, तिल एक देह दीनबन्धु ॥

१४

हे पार्थ-सारथी बजाओ बजाओ पञ्चाजन्य शंख ।
चित्तेर अवसाद, दूर करो, करो दूर
भयभीत जने करो हे निःशङ्क ॥
धनुकेर टङ्कार हानो हानो
गीतार मन्त्रे जीवन दानो,
भोलाओ भोलाओ मृत्यु-आतङ्क ॥
मृत्यु जीवनेर शेष नहे नहे
अनन्त काल धरि अनन्त प्रवाह जीवने बहे;
दुर्मद-दुरन्त यौवन चञ्चल
छाड़िया आसुक मार स्नेह अञ्चल ।
वीर सन्तानदल करुक सुशोभित मातृ-अंक ॥

१५

भजन—कहारवा

श्याम ! मैंने चाकर राखोजी, गिरधरलाल ! चाकर राखो जी ।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरशन पासूँ ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में तेरी लीला गासूँ ॥
चाकरी से दरशन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तिनु बाँता सरसी ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजयन्ती माला ।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ॥

हरे हरे नित बाग लगाऊँ बीच बीच राखूँ केआरी ।
साँवरिया के दरशन पाऊँ, पहर कुसुमी सारी ॥

योगी आया योग करणकुँ, तप करणे संन्यासी ।
हरि भजनकुँ साधु आया, वृन्दावन के वासी ॥

मीरा के प्रभु गहिर गम्भीरा सदा बहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरशन दीन्हें प्रेमनदी के तीरा ॥

१६

पिलु—कहारवा

हरि आये तेरे मन मन्दिर में,
स्वागत कर ले पूजारी ।
फूल बना ले मन को तेरे
पूजन कर गिरिधारी ॥

हृदय कमल से पूजन कर ले
देख मूरति जी को भर ले ।
चरण चूम ले नूपुर होकर
बन करके गिरिधारी ॥

प्रेम के आँसू भेंट चढ़ा ले
भक्ति-प्रेम-अनुराग बढ़ा ले ।
तन-मन दे दो उन चरणन पर
आये व्रजमन-हारी ॥

१७

श्यामल वंशीवाला, नन्दलाला
मातोवाला रे गोकुल के उजियाला।
(गोकुल के उजियाला प्यारे गोकुल के उजियाला)
'कृष्ण कृष्ण' कहो साँझ सबेरे, कृष्ण नामे सब दुःख हरे
कृष्ण ही भवसागर पारे पार लगाने वाला।
कोई कहत है कृष्ण मुरारी, कोई कहत है रासविहारी
कोई कहत है हरे मुरारी जपे तुलसीके माला॥

१८

कीर्त्तन

देखे एलेम ताँरे सखी देखे एलेम ताँरे।
एकइ अङ्गे ऐतो रूप नयने ना धरे॥
बेंधेछे विनोद चूड़ा नवगुञ्जा दिया।
उपरे मयूरेर पाखा वामे हेलाइया॥
कालिया वरणखानि चन्दनेते माखा।
आमा हइते जाति कुल नाहि गैलो राखा॥
मोहन मुरली हाते कदम्ब हिलन।
देखिया श्यामेर रूप हलेम अचेतन॥
गृहकर्म करिते एलाय सब देह।
ज्ञानदास कहे विषम श्यामेर लेह॥

१९

बेहाग—एकताला

किबा घोर निशाय;—
निखिल जगत झिल्लिरवावृत्त जीवगण यतो आलसे घुमाय।

ऐमन समय पतित-पावन,
जगत जीवन ब्रह्म सनातन।
त्यजिया साधेर वैकुण्ठ भुवन
अवतीर्ण हते आइलेन धराय॥
रोहिणी नक्षत्र अष्टमी तिथिते,
देवकी जठर-सागर हइते,
श्रीकृष्ण-चन्द्रमा उदिलो भारते
नाशिते जीवेर भार।
वसुदेव अति कातर अन्तरे,
तिमिरे तिमिर-मणि कोले करे,
वासुकी-माथाय फणी छत्र धरे;—
हाँटिया यमुना पार हये याय।

२०

भजन—ठुरी

(आमि) गिरिधारी मन्दिरे नाचिबो।
छन्द पूजाञ्जलि ढालिबो चरणे
नाचिया हरि-प्रेम याचिबो।
प्रेम-प्रीतिरे बाँधिबो नूपुर
रूपेर वसने आमि साजिबो;
कृष्ण नामावली अंगे भूषण धरि
आरतीर नृत्ये मातिबो॥
जीवन मरणे करताल झंकार
बाजिबे मृदङ्ग,—अनाहत ओंकार
पाषाणेर घुम आमि भाँगिबो राणाजी
हरिरे मीरार रंगे राङ्गिबो॥

२१

हरि भजन बिन सुख नाहि रे।
नरक्यो वृथा भटकाइ रे।
काशी गया द्वारका जावे
चार धाम तीरथ फिर आवे।
मन की मैल न जाइ रे॥

छाप तिलक बहु भाँत लगावे
शिर पर जटा विभूति रमाये।
हृदे शांति न आई रे।
वेद पुराण पढ़े बहु भारि
खण्डन मण्डन उमर गुजारि
वृथा लोक बढ़ाई॥

चार दिवस जग बीच निवासा
ब्रह्मानन्द छोड़ सब आशा
प्रभु चरणन चित लाइ रे॥

२२

तिमिर विदारी अलख विहारी
कृष्ण मुरारी आगत ओई।
टूटिल आगल निखिल पागल
सर्वासहाय, आजि सर्वजयी॥

बहिछे उजान अश्रु यमुनाय,
हृदि-वृन्दावने आनन्द डाके आय।
वसुधा-यशोदार स्नेहधार उथलाय
कालो राखाल नाचे थै ताथै॥

विश्व भरि ओठे स्तव नमोनमः
अरिर पुरी माझे एलो अरिन्दम॥
घिरिया द्वार वृथा जागे प्रहरीजन
बन्ध कारायं एलो बन्ध-विमोचन
धरि अजाना पथ,आसिलो अनागत
जागिया व्यथाहत डाके "मा भैः"॥

२३

मेरे जनम-मरण के साथी, तुहुँ नहीं विस्मरूँ दिनराती।
तुहाँ देखीं बिन पल ना काटत है जानत मेरी छाती॥
ऊँची चढ़-चढ़ पन्थ नेहारूँ रोय रोय आँखिया राती।
जो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती॥
द्वौ कर जोड्या अरज करुछूँ सुन लिजो मेरी बाती।
पल पल पिबको रूप नेहारूँ निरखि निरखि सुख पाती।
मीरा क प्रभु गिरधर नागर हरिचरणा चित राती॥

२४

बाँशी आमाय डाके गो ;
(नाम धरिया डाके गो)
(राधा राधा राधा बोले डाके गो)
गृह-काजे मन बसे ना आमार मन बसे ना
आमार मन बसे ना
चरण चलिते चाय गो। वारण माने ना गो
वारण माने ना—वारण माने ना।

ओलो ननदी दिसने बाधा येते दिसने बाधा
आमि ये कलङ्किनी राधा।
कलङ्क ना लये शिरे; आमार मन बसे ना॥
बैला मे पड़े एलो, जलके याबार समय होलो
दे ननदी पथ छेड़े दे आज।
लोके यदि शुधाय तोरे, बलिस राधा गैछे फिरे
पथेर धुलाय कुलवधूर लाज॥
सर्वनाशा श्यामेर बाँशी,तबु ये हाय भालोबासि।
तिलेक ध्वनि ना शुनिले धिरज माने ना॥

२५

आमि कि सुखे लो गृहे रबो।
(आमार) श्याम यदि ओगो योगी होलो सखि,
आमिओ योगिनी हबो।
से आमार ध्यान करितो गो सदा
से ध्यान भाङ्गिलो यदि,
से भोले भुलुक आमि ऐ रूप
ध्यायाइबो निरवधि।
(श्याम) ये तरुर मूले बसिबे लो ध्याने
आँचल बिछाये रबो॥
सखि, धूलाय, यदि से माँगे,
आमि आपनि हइबो राङ्गा पदधूलि
बँधुयार-इ अनुरागे।
(वा) हबो भिक्षार-इ झुलि श्याम लबे तुलि
बाहुते आमारे जड़ाये।

सखि, आमार वेदन—गैरिक रांगा वसन
दिबो तारि पराये॥
(किंवा) आमार प्राणेर गोधूलि बेलार
रंगे रंगे तारे रांगाइबो आमि;
(अथवा) ताँर गेरुया रांगा वसन हइबो
जड़ाये रहिबो दिवस यामी।
(सखि गो) आमार ए तनु शुखाबे
गभीर अभिमानेर ज्वाला।
(आर) आमि ताइ दिये तार हबो
गलार रुद्राक्षेर माला।
मरे एबार माला हबो॥

२६

ओरे नील यमुनार जल
बल् रे मोरे बल्
कोथाय घनश्याम, (आमार) कृष्ण घन-श्याम।
आमि बहु आशाय बुक बेंधे ये एलाम,
एलाम व्रजधाम।
तोर कोन् कूले कोन् बनेर माझे
कानुर बेनु बाजे, बेनु बाजे
आमि कोथाय गैले शुनते पाबो
'राधा' 'राधा' नाम।
आमि शुधाइ व्रजेर घरे घरे कृष्ण कोथाय बल?
कैनो कोउ कहे ना कथा (हेरि) सबार चोखे जल।

वल रे आमार कानु कोथाय
कोन् मथुराय कोन् द्वारकाय (वल यमुना वल)
बाजे वृन्दावनेर कोन् पथे ताँर नूपूर अविराम।

२७

यदि यमुनार जले फूल होये भेसे याइ
ओगो वृन्दावनेर कूले;
हे लीला किशोर चरणे दिवे कि ठाँइ
अचेना स्रोतेर फूले ?
यदि आमि वेणु बने वेणु हइ निरजने
तुमि राखालिया वेशे रांगा दुटि करे
लवे कि आमारे तुले ?
यदि शिखि हये नाचि रिमिझिम् वरषाय
मुकुटे तोमार बाँधिबे कि चूड़ा मोर पाखाय ?
पीतवास हबो यबे, मोरे कि जड़ाये रबे
यदि वृन्दावनेर धूलि हइ, तबु
रहिबे कि मोरे भूले ?

२८

प्रभु तेरे चरण में आयेके फिर आश किसकी कीजिए।
बैठी गगा किनारे क्यों कूप का जल पीजिए॥
दीन-निर्धन, नहीं हूँ लायक तुम्हारे दरबार का।
मलिन रजनी माफ कर करुणा की रोशनी दीजिए॥
पतित-पावन कहत सब जन शरण मैं तेरी पड़ा।
सफल कर इस स्वप्न को, अपना मुझे कर लीजिए॥
नाम जिसके बीज सम फूल - धाम उछलत पङ्क में।
श्याम ऐसो छोड़के फिर कौन से हित कीजिए॥

प्रभु तोमार चरणेर भिखारी होये नाथ,
(आर) काहार काछे हात पातिबो ?
गंगातीरे बेंधे कुटीर कौन मुखे
शिशिर-जल सुखे चाहिबो ?
म्लान अकिञ्चन कि गुणे पाबे तव सभाय गौरव आसन ?
निशीथ सम्बल करि कैमने हाय ! अरुण करुणाय साधिबो ?
दीन तारण तुमि आपन महिमाय
ताइ तोमार पाय चाइ हे ठाँई,
सफल करो मम स्वप्न निरुपम
तोमारे प्रियतम जानिबो।
श्यामल नाम याँर पङ्क बीज बुनि
कुसुम सुरधुनी उछले
शरण अधिकार छाड़िया आजि तार
वरण-माला कार गाँथिबो ?

३०

बाला मैं बैरागन हूँगी
जिन भेषा मेरे साहिब रीझे सोई भेष धरूँगी॥

शील-सन्तोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी।
जाको नाम निरञ्जन कहिए, ताँको ध्यान धरूँगी॥

गुरु के ज्ञान रंगु तन कपड़ा मनमुद्रा पहरूँगी।
प्रेम-पीपासु हरि गुण गाव चरणन लिपट रहूँगी॥

ये तन की मैं करूँ किङ्करी रसना नाम कहूँगी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सदा संग रहूँगी॥

३१

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग अंगवास समानी।
प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा,
वैसे चितवत चन्द चकोरा।
तुम दीपक हम बाति,
जाकि ज्योति बढ़े दिन राति।
तुम मोती हम धागा,
जैसे सो नहीं मिलत सोहागा।
तुम स्वामी हम दासा,
ऐसे भक्ति करे रहदासा।

३२

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़ा
अब मोहे क्यों तरसाओ।
विरह-व्यथा लागि उर अन्तर
सो तुम आय बुझाओ॥
अब छोड़त नहीं बनै प्रभुजी
हँसकर तुरत बुलाओ।
मीरा दासी जनम जनम की
अंग में अंग लगाओ॥

३३

भजो मधुर हरि नाम, हरि नाम निरन्तर
मधुर कृष्ण नाम॥ टेक॥

सरल भाव से हरि भजे जो
पावे सो सुख-धाम॥
हरि ही सुख है हरि ही शांति
हरि हो प्राणाराम॥
हरि ही पाप से मुक्त करे
जो भजे अविराम॥

३४

परब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द,
नन्द-नन्दन आनन्द-कन्द यशोदानन्द श्रीगोविन्द।
दीन-नाथ दुःख-भञ्जन भक्त-वत्सल यदु-नन्दन,
काटो दुःख-द्वन्द्व-कन्द श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द।
मधुसूदन मदनमोहन मुरलीधर धरा-पोषण,
श्याम मूरत मनोभावन माधोमुकुन्द श्रीगोविन्द।

३५

हरि हरि हरि हरि गुञ्जन करो,
हरि चरणारविन्द उर धरो।
हरि कीर्त्तन होवे जब जहाँ
गंगा ही चली आवे तहाँ
यमुना सिन्धु सरस्वती आवे
गोदावरी विलम्ब न लावे
सर्व तीर्थ को बासा तहाँ
सुनो हरि-कथा होवे जहाँ।
हरि हरि हरि हरि गुञ्जन करो
हरि हरि हरि हरि सुमिरण करो॥

३६

नव घन श्याम मूरति मनोहर हमारे हिया पर जागे।
श्रुतिमूले चञ्चल कुण्डल मणिमय पीतवास दोले पीठ-भागे॥
नील नलिनीदल आँखि दुटि उज्ज्वल बिजुली चमके रूप-रागे।
शतविधु-निन्दित चारुमुख-पंकज शिखि-पाखा शोभे शिर-भागे।
इन्दु-विनिन्दित कुन्द-कुसुम-हास, मण्डित तव पद-युगे।
मिनति चरण परे भकति मिलाओ बँधु निति निति नव अनुरागे।
भृगुपद-चिह्नित विशाल हिया-माझे परिमल फूल-हार राजे॥

३७

संसार-माया छाड़िये कृष्ण नाम भजो मन।
कृष्ण नाम जपो रे, भजो रे, पाबे अमूल्य धन॥
विषय-वासना, मायार छलना सकलि घुचिया याबे।
रूपेर पियासा पलके मिटिबे नयने हेरिबे अरूप रतन॥
सुन्दर वरण रूपेर चेतना सुन्दरे दशदिशि मगन।
अपरूप विभवे पराण भरिबे राजीव चरणे परश दान॥

३८

हरे मुरारे हरे मुरारे
पतित पावन जगजन-जीवन अनादि कारण कृपाबारे।
तुमि तेजरूपे तपने प्रकाश
ज्योतिरूपे शशधरे जलरूपे जलधरे
तुमि क्षिति तुमि-इ आकाश।
वायुरूपे जीवेर जीवन
तुमि आछो सकलेते सकलि आछे तोमाते
सृष्टि स्थिति प्रलय कारण।

तुमि आदि, तुमि शेष, तुमि हे अनन्त
आकार कि निराकार बुझिते शकति कार?
तुमि आछो व्याप्त चराचरे।

३९

गिरिधारी गोपाल व्रज-गोप-दुलाल।
अपरूप घनश्याम नव तरुण तमाल॥
विशाखा पटे आँका अति निरुपम।
कान्ता ललिता श्रीराधा प्रीतम।
रुक्मिणीर पति हरि यादव गोपाल॥
यशोदा - स्नेह - डोरे बाँधा मनचोर,
नन्देर नन्दन आनन्द किशोर
श्रीदाम सुदाम सखा गोपेर राखाल॥
कंस - निसूदन कृष्ण मथुरा-पति
गीता - उद्गाता पार्थ - सारथी
पूर्ण भगवान विराट विशाल॥

४०

भैरबी—कहारवा

साधन करना चाहिए मनुआ, भजन करना चाहि।
प्रेम लगाना चाहिए मनुआ, प्रीति लगाना चाहि॥
नित नाहन से हरि मिले तो जलजन्तु होई।
फल मूल खाके हरि मिले तो बादुर बाँदराई॥
तुलसी पूजन से हरि मिले तो मैं पूजूँ तुलसी-झाड़।
पत्थर पूजन से हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़॥

तिरण भखन से हरि मिले तो बहुत मृग अजा।
स्त्री छोड़न से हरि मिले तो बहुत रहे खोजा॥
दूध पिबन से हरि मिले तो बहुत वत्स बाला।
मीरा कहे बिना प्रेम से नहीं मिले नन्दलाला॥

४१

तिलक—त्रिताल

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥
मैं बालक बहियन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥
तू जननी मति की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजी है, जानि परायो जायो॥
यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुत ही नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि यशोदा लै उर कण्ठ लगायो॥

४२

आजके हरि खेलबो होलि, एसो तुमि नन्द दुलाल।
अनुरागेर रंग दिये आज श्यामल तोमाय करबो ये लाल।
पलाश छड़ाय फागेर रेणु, तोमार चलार पथटिते
एसो आमार जीवन मरण पूर्वाचलेर तोरण दिये
तोमार आमार जीवन बलो थाकबो आमि आर कतो काल।

४३

मिश्र साहाना—दादरा

हरि हे तुमि आमार सकल हबे कबे!
आमार मनेर माझे भवेर काजे मालिक होये रबे। कबे?
(आमार) सकल सुखे सकल दुखे तोमार चरण धरबो बुके
कण्ठ आमार सकल कथाय तोमार कथाइ कबे। कबे?
किनबो याहा भवेर हाटे आनबो तोमार चरण बाटे
तोमार काछे हे महाजन सबइ बाँधा रबे। कबे?
स्वार्थ प्राचीर करे खाड़ा गड़बो यबे आपन कारा
वज्र हये तुमि तारे भाँगबे भीषण रबे! कबे?
पाये यखन ठेलबे सबाइ तोमार पाये पाइ यैनो ठाँइ
जगतेर सकल आपन हते आपन हबे कबे? कबे?
(शेषे) फिरबो यखन सन्ध्याबेला सांग करे भवेर खेला
जननी हये तखन आमाय कोल बाढ़ाये लबे। कबे?

४४

कीर्तन

तातल सैकते वारि-विन्दु-सम सुतमित्त रमणी-समाजे।
तोहे बिसरी मन ताहे समर्पिनु, अब मझु हबो कोन काजे॥
माधव, मझु परिणाम निराशा।
तुहुँ जग-तारण दीन-दयामय आवे तुम्हारी विश्वासा॥
आध जनम हम नींद गवाँयनु, जरा शिशु कतो दिन गेला।
निधुवने रमणी-रसरंगे मातनु, तोहे भजब कोन बेला॥
कत चतुरानन मरि मरि यावत, न तुया आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुनः तोहे समावत, सागर लहरी समाना॥

भनय विद्यापति शेष शमन भय, तुया बिनु गति नाही आरा।
आदि-अनादि नाथ कहायसि, अब तारण भार तुम्हारा॥

४५

बलो माधव बलो, आर कतो दुःख देबे बलो।
दुःख दिये यदि सुख पाओ, तबे आँखि कैनो छल छल?
आमि चाइ तब श्रीरणे ठाँइ,
तुमि कैनो ठेलो बाहिरे सदाइ,
आमि कि ऐतोइ भार ए जगते, हे पाषाण तुमि अटल॥
क्षुद्र मानुष भोले अपराध, तुमि नाकि भगवान?
तोमार चेयेओ कि अपराध बड़ो, दिले ना पायेते स्थान!
हे नारायण आमि नारायणी सेना
(मोरे) कुरुकुले दिते प्राणे कि बाजे ना?
यदि चार हाते मेरे साध नाहि मेटे, दुचरण दिये दलो॥

४६

भैरवी—त्रिताल

मधुकर श्याम हमारे चोर।
मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर॥
पकड़े हुते आन भर अन्तर प्रेम प्रीति के डोर।
गये छुड़ाये तोड़ सब बन्धन दै गये हुँसन अकोर॥
अचक परो जागत निसि बीते तारे गिनत भई भोर।
सूरदास प्रभु हत मन मेरो सरबस ले गयो नन्दकिशोर॥

४७

(मोरे) श्याम सुनो मेरी बिनती।
मैं बिनती कर कर हारी॥

तुम सुख के छावत शोवत हो,
मैं तरपत हूँ दुखियारी।
तुम से ना कहूँ तो कहूँ किससे,
तुम से प्रीत लगि जब से,
मैं प्रीत लगाकर जीत गये
तुम प्रीत लगाकर हारी॥
दिन-रात विरह दुःख झेलत हूँ
तुम बिन पलछीन चैन कहाँ;
बस तकत हूँ बात तुम्हारी
तुम प्रीत लगाकर हारी॥

४८

प्रेमी मोहन का घर मन में
नहीं है काशी मथुरा में
नहीं है वृन्दावन में।
जटा तिलक बहु रूप बनाकर
दीप चन्दन धूप जलाकर
माला युग-युग फिरा-फिराकर
लाखों यत्तन करने पर भी वह
मिलता नहीं जीवन में॥
उतने ए दुनिया है रीति
जिसने की घनश्याम से प्रीति
तुम्हें सुनाऊँ अपनी गीती
नयना मोकर मैंने पाया
उसको प्रेम भजन में॥

५०

कीर्तन—खैरा

यदि गोकुल - चन्द्र व्रजे ना एलो ।
(आमार) ए हेन जीवन परश रतन काँचेर समान भेलो ॥
(आमि) गेरुआ वसन अङ्गेते धरिबो शंखेर कुंडल परि ।
(आमि) योगिनीर वेशे याबो सेइ देशे येथाय निठुर हरि ॥
(आमि) मथुरा नगरे प्रति घरे-घरे याइबो योगिनी हये ।
(तथाय)यदि मिलाय विधि मम गुणनिधि बाँधिब अञ्चल दिये ॥
(आमि)आपन बँधुया आपनि बाँधिबो केबा राखिबारे पारे ।
(आर)यदि रोधे केउ त्यजिबो ए जिउ नारी-वध दिबो तारे ॥
(आमि)पुनः भाबि मने बाँधिबो कैमन से श्याम बँधुया करे ।
(हाय) बाँधियाँ कैमने धरिबो पराणे ताइ भाबितेछि चिते ॥
ज्ञानदासे कय विनय वचने शुनो विनोदिनी राधा ।
मथुरा नगरे येते माना करे दारुण कुलर बाधा ॥

५१

कीर्त्तन—खैरा

माधव तुहुं रहलि मधुपुर ॥
व्रजकुल आकुल दुकूल कलरव कानु कानु बलि झुर ।
यशोमति-नन्दन अन्धसम बैठत, साहसे चलाइ ना पार ॥
समागम धेनु वेनुरव बिछुरलु, तरुगण मलिन समान ।
पिक शुक-सारी मयूरो ना नाचत,कोकिल न करतहि गान ॥
विरहिनी विरह कि कहब माधव दश दिके विरह हुताश ।
सोई यमुना जल, कूल अधिक भेलो, कहतहि गोविन्ददास ॥

५१

हरि तोमाय छेड़े जीवन धरे
रइबो कैमन करे ।
तुमि धन दियेछो मान दियेछो
प्राण नियेछो केड़े ॥
आमार कि काज धने तोमा बिने
यखन भावे गले डाकि हा कृष्ण बले
तुमि अमनि एसो हेले दुले
भव - सागरेर तीरे ॥

५२

कीर्त्तन

मरिबो मरिबो सखि निश्चय मरिबो,
कानु हेनो गुणनिधि कारे दिये याबो ।
तोमरा यतेक सखी थेको मधु सङ्गे,
मरण काले कृष्ण नामटि लिखो मधु अङ्गे ।
ललिता प्राणेर सखी मन्त्र दिबो काने,
भरा देह पड़े यैनो कृष्ण नाम शोने ।
ना पोड़ायो राधा अङ्ग ना भासायो जले,
मरिले तुलिये रेखो तमालेरि डाले ।
सेइ तो तमाल तरु कृष्ण वरण हय,
अविरत तनु मोर ताहे येनो रय ।
कबहुँ से पिया यदि आसे वृन्दावने,
पराण पायब हम पिया दरशने ।

भनये विद्यापति शुनो वरनारी,
धैरज धरय चित्ते मिलब मुरारी।

५३

आमार कृष्ण कोथाय तोरा बल बल रे।
आमार मन ये माने ना माना, नयने बादरल झरे अविरल रे।
आमार कृष्ण बिना एलो कृष्ण राति व्रजेर सुनील आकाशे।
श्याम - चन्द्र आजि मथुरा - पुरे पूर्णिमा चन्द्र हासे।

५४

भजन—कहारवा

मैं हरि चरणन के दासी।
मलिन विषय रस त्यागे जग की
राम नाम रस प्यासी॥
दुख अपमान कष्ट सब सहिया
कुटिल जगत को फाँसी।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर
त्यागे जगत की हाँसी॥
आवो प्रीतम सुन्दर निरुपम,
अन्तर होत उदासी।
मानस नहीं माने धीरज मोहन
तरपत निशदिन दासी॥
श्यामलिया मोहनिया नागरिया मेरो प्रिया
प्रभु आवो आवो आवो आवो
आवो आवो जी॥

५५

कृष्ण नामेर मन्त्रखानि शिखाये दाओ गो।
ये देशे आछेन कृष्ण सेथा निये याओ गो॥
कृष्ण नामे आँखि - वारि दर दर बहिबे।
आमार नयन जले नाम लेखा रहिबे॥
कृष्ण नाम लये आमि याइबो ये वने।
गाहिबो कृष्णेर नाम विहगेर सने॥
कृष्ण नामेर नामावली अङ्गेते धरिबो।
नाम सुधा सिन्धु माझे डुबिया रहिबो॥

५६

कुञ्जन बन छोड़ि है माधो, कहाँ जाओ गुणधाम।
जो मैं होतो जल की मछलियाँ
जब प्रभु करते हो स्नान
चरण चूम लेती है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥
जो मैं होती बाँस की बाँसुरिया
करती मुख पर वास
अधर-रस पीती है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥
(प्रभु) जो तुम चाहो मिलन हमारो
मीरा के घनश्याम।
दरशन बिन व्याकुल है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥

५७

मुझे लागि लगन तेरे दरशन की।
जैसे वन में पपिहा मन में
आश करे निस बरसन की।
गल वनमाला मुकुट विशाला
पीत वसन सुन्दर तन की।
मणिकटि ऊपर चरणन नूपुर
कर में गदा सुदर्शन की।
ब्रह्मानन्द प्यासा मनमाहिं
चरण-कमल-युग परशन की।

५८

भरवी—कहारवा

हे माधव हे माधव
हे माधव, तोमारे-इ प्राणेर वेदना कवो।
तोमार-इ शरण लवो।
सुखेर सागरे लहरी समान हिल्लोले ओठे यैनो तव नाम गान
दुःखे शोके कांदि यबे प्राण, यैनो नाम ना भुलि तव।
तोमा छाड़ा विश्वे काहारो काछे, ए प्राण यैनो किछु नाहि याचे
यैनो) तोमार अधिक प्रिय केहो नाहि हय,
विश्वभुवन यैनो हेरि तोमा-मय,
कलङ्क-लाञ्छना शत बाधा भय तव प्रेमे सकलि सबो॥

५९

आजि सई कुदिन सुदिन भेलो।
माधव मन्दिरे तुरिते आवो कपाल कहिया गैलो॥
चिकुर फुरिछे वसन खसिछे पुलक यौवन भार
वाम अङ्ग आँखि सघने नाचिछे दुलिछे हृदय हार
—(अजु) विधि अनुकूल भेलो॥

६०

संत परम हितकारी, जगत माहिं॥
प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति, भरम मिटावत भारी॥
परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सब दुखहारी॥
त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी, रोत जगत में न्यारी।
ब्रह्मानन्द सन्तन को सेवत, मिलत हैं प्रगट मुरारी॥

६१

गजल

पी ले पी ले हरि नाम का प्याला।
इसको पीकर और पिलाकर बन जा तू मतोवाला॥
यह प्याला दुनिया से न्यारा
इस की रंग न्यारी।
मीठी मीठी सोंदी सोंदी
खुशबू प्यारी प्यारी।
इसके बूँद बूँद में बिघ्ने सुख का अमृत ढाला॥

कोई इसको मुखसे पीकर
दुख को दूर भगाये।
कोई इसको दूर दूर से
दुख का जहर बताये।
बिना पिये कोई क्या समझे, इसका भेद निराला॥

६२

वेहाग खम्बाज—कहारवा

विकल प्राण हरि नाम बिना,
हृदय - दीप हरि -ज्योति बिना,
भुवन रूप रवि भाति बिना,
हृदय - राग हरि-गीति बिना॥

चन्द्र निशा बिना, गन्ध कुसुम बिना,
कुसुम भ्रमर बिना, भ्रमर गीत बिना,
गीत राग बिना, राग भजन बिना,
भजन विफल हरि नाम बिना॥

भवन दीप बिना, दीप ज्योति बिना,
ज्योति नयन बिना, नयन भाव बिना,
भाव मरम बिना, मरम प्रेम बिना,
प्रेम विफल हरि नाम बिना॥

जनम भुवन बिना, भुवन भोग बिना,
भोग देह बिना, देह रूप बिना,
रूप प्रेम बिना, प्रेम भक्ति बिना,
भक्ति विफल हरि नाम बिना॥

६३

केदारा—त्रिताल

भजो राधाकृष्ण गोविन्द गोपाल गदाधर गिरिधारी।
देवकी-नन्दन गोकुल-चन्द्रमा, जनार्दन जग-वन्दन हे।

परब्रह्म परमेश्वर ईश्वर
अलख निरञ्जन अविनाशी हर
औघ विहारी श्री वनोवारी
सीयावर रघुनन्दन हे।

दीनदयाल दामोदर रघुवर
यदुवर जगचिन्तामणि धनुधर
परशुराम श्रीरास - विहारी
नटवर नट यदुनन्दन हे।

नारायण नरसिंह नरोत्तम
पुरुषोत्तम परमानन्द माधव
बालमुकुन्दम् आनन्दकन्दम्
सीयाशरण करवन्दन हे॥

६४

गाहो नाम अविराम कृष्ण नाम कृष्ण नाम,
महाकाल ये मामेर-ई करेन प्राणायाम।
ये नामेर गुणे कंस - कारार खोले द्वार
वसुदेव ये नामे यमुना हलो पार
ये नाम-मायाय हलो तीर्थ व्रज - धाम॥

(ये नामे) देवकीर बुकेर पाषाण गले
ये नाम दोले यशोदार कोले
ये नाम लये कांदे राइ रसमयी
कुरुक्षेत्रे ये नामे हलो पाण्डव जयी
गोलोके नारायण भूलोके राधाश्याम ॥

६५

भूपाली मिश्र—विताल

दोले दोले श्याम मधुर वेणु बाजाय ।
हेले दुले खेले राखाल धेनु चराय ॥
वनमाला गले मोती चूड़ाय,
नू पुर बाजे रिनि-झिनि
रिनि झिनि रिनि झिनि पाय ॥
राधा दोले आजि श्याम सने,
वृन्दावने आनन्द मने ।
पिचकारी रंग छोटे झर झर झर झर झिरि झिरि गाय ॥

६६

भैरवी—कहारवा

गिरि-गोवर्द्धन-गोकुलचारी, यमुन - तीर -निकुञ्ज - बिहारी ।
श्याम-सुठाम-किशोर, त्रिभङ्गिम चित्त विनोदनकारी ॥
पीताम्बर-वनपुष्प-विभूषण चन्दन-चर्चित मुरलीधारी ।
जिस रव से मोहित वृन्दावन, उछलत यमुना वारि ॥
नूपुर-शिञ्जित, नृत्य-विमोहन कपट-चपल-चतुराली ।
प्रेम निमीलित नयन-विलोभन कदमतले वनमाली ॥

नन्दका नन्दन मायो जाके यशोदा, निखिल-भक्तजन-शरण ।
दुर्जन-पीड़न, सज्जन-पालन, सुर-नर-वन्दित-चरण ॥

जय नारायण श्रीश जनार्दन, जय परमेश्वर भवभयहारी ।
जय केशव जय मधुसूदन, गोविन्द मुकुन्द मुरारी ॥

६७

नूतन करे गड़बो ठाकुर कहि पाथर दे, माँ एने ।
(दिबो) हाते बाँशी, मधुर हासि झागर चोखे काजल टेने ।
मथुराते आर यावे ना, माँ यशोदाय काँदाबे ना ।
रइबे व्रजगोपीर केना, चलबे राधार आदेश मेने ।
श्रीचरण तार गड़बो ना माँ, गड़ले चरण पालिये याबे,
नाइबा शुनले नूपुर-ध्वनि, ठाकुरके तो काछे पाबे ।
चरण पेले देशे देशे कुरुक्षेत्र बाधावे से,
गन्धमाला दिस ने मागो, भक्त भ्रमर फेलबे जेने ।
(तारे) देखले परे करबे चुरि, (अमरा) ऐकलाघरे मरबो झुरि ॥

६८

रूपानुराग

रूप लागि आँखि झुरे
गुणे मन भोर ।
प्रति अङ्ग लागि काँदे
प्रति अंग मोर ।
हियार परश लागि
हिया मोर काँदे
पराण पुसलि मोर
शिहर नाहि बाँधे ।

गुरु गरविते माझे
थाकि सखी-संगे
पुलके पुरये तनु
श्याम परश अंगे।
घरेर यतेक जन
करे काणाकानि
बुत्तान कहे लाजघरे
भेजाओ आगुनि॥

६९

रूपानुराग—कीर्तन

आमि कि रूप हेरिनु मधुर मूरति
पीरिति रसेर सार।
एइ तो आमि देखे एलाम।
यमुनार जल आनते गिये
एइ तो आमि देखे एलाम।
हैनो लय मने ए तीन भुवने
तुलना नाहिको तार।
नाइ तुलना, मोहन रूपेर नाइ तुलना
तार तुलना तारि काछे……।
बड़ो विनोदिया चूड़ार टालनि
कपाले चन्दन चाँद।
जिनि विधुवर वदन सुन्दर
भुवन मोहन फाँद।

किबा नवजलधर रसे ढलो ढलो
वरण चिकण काला।
अंगेर भूषण रजत काञ्चन
मणि मुकुतार माला।
सुन्दर अधरे मधुर मुरली
हासिया कथाटि कय।
द्विज भीमे कहे ओरूप नागरे
देखिले पराण रय॥

७०

रूपानुराग

मरकत मञ्जुर मुकुर मुख-मण्डल
मुखरित मुरली सु-तान।
शुनि पशु-पाखी शिखिकुल आकुल
कालिन्दी बहये उजान।
सुन्दर श्यामल चन्द
कामिनी मनहि मूरतिमय मनसिज
जगजन नयनानन्द।
तनु अनुलेपन घनसार चन्दन
मृगमद कुमकुम पंके।
अलिकुल-चुम्बित अवनी विलम्बित
बनिबण मालबीटङ्क।
अति सुकुमार चरणतल शीतल
जीतल शारदारविन्द।
रायत वसन्त मधुप अनुसन्धित
निन्दित दास गोविन्द।

७१

कीर्त्तन

चन्दन हइया शीतल परशे
अंगेरि परश लबो।
तार तनुते तनुते अणुते अणुते
सोहागे जड़ाये रबो।
सुखे जड़ाये रबो।

ये अङ्ग लागि अङ्ग कान्दे से श्याम अङ्गे
सुखे जड़ाये रबो।

शीत चन्दन हये बँधुर अङ्गे परश
सुखे जड़ाये रबो।

आमि फुलेर मतो ताहार पथे
धूलाय लुटाते चाइ।
यैनो ताहारि विरहे झुरिया झुरिया
अमनि झरिया याइ॥
यैनो झरे पड़ि गो।
फुलेरि मतन झरे पड़ि गो।

से यें चले येते दले याबे,
फुलेरि मतन झरे पड़ि गो।

ओ तार चरण घाये चूर्ण हते
ताइ तो चलार पथे झरे पड़ि गो।

तार चरण परश पाबार लागि
ओ तार चलार पथे झरे पड़ि गो।

आमार नीलमणि श्याम ताइ सखी मोर
वसन नीलाम्बरी।
बँधु मोर नील, यमुनाओ नील
सहजे डुबिया मरि॥
सब दिनु तारे आमार बलिते
आमार किछुइ नाइ।
आमार या छिलो श्याम अनुरागे
श्यामेरि हयेछि ताइ॥
आर किछु नाइ
आमार बलते आर किछु नाइ।
आमार आमि तारेइ दिछि
आमार बलते आर किछु नाइ।
श्यामेर हयेछि ताइ॥

७२

(राई) अति कातरा राधिका देखिया अधीरा
विशाखा आसिया कय।
(ओ गो राई) किसे ऐतो धनी व्याकुल हइलि
नाहिक सरम भय॥
छि छि धनी (लाज नाइ राई)
प्रेमेर दाये मान खोयालि,
छि छि धनी (लाज नाइ राई)।
याइबि पश्चिमे बलिबि दक्षिणे
दाँड़ाबि पूरब मुखे।
गोपन पीरिति गोपने राखिबि
तबे तो रहिबि सुखे॥

धरा दिलि ना राई।
साधले धरा आशार आशे राखबि बटे,
धरा दिलि ना राई।
से जन चतुर सीमेर शिखर
सूताय गाँथिते पारे।
कहे चण्डीदास पाइले से रस
तब से मिलाय तारे॥
बुझलि ना राई।
चतुराली बुझलि ना राई।
चतुरेर सने चातुरी करिलि
बुझलि ना राई।
सापेर मुखेते मेकेरे नाचाबि
तबे तो रसिक - राज।
अन्तरे प्राण संपे दिबे सुखे
कोनो कथा बलबि ना राई।
चतुरेर साथे चातुरी करिते
अधिक चतुरा चाइ॥

७३

हरि बलो नौका खोलो साधेर जोआर याय
समय बये याय।
माझी लोकेर एमनि रीति एक सामने बैठा बाय।
शोनो माझी भाई तोरे बलि
जल चिनिया बाइ ओगो तरि
पइर ना खोलाय।
माझी लोकेर एमनि रीति एक समाने बैठा बाय।

पिछेर नौकार माझीरा भालो
तारा बेये आगे ये गैलो
फिरे फिरे चाय।
घाट चिनिया नाव लागाइओ मौला
नाव लागाइओ प्रेम तलाय।

७४

हरि नाम लिखे ने रे प्राणे
लिखे ने रे प्राणे।
नामेर आलोय धुचबे कालो
(ओ) तोर हृदयेर माझखाने।
लिखे ने रे प्राणे।
जगत - कोलाहलेर माझे थाकबि यखन नाना काजे।
प्राणे प्राणे नामेर माला जपिस रे सावधाने।
लिखे ने रे प्राणे।
संसारेर एइ काजेर फाँके सकल भूले रे।
हरिनामे डुब दे रे भाई पाराणी खुले रे।
देखबि रे भाई नामे नामे भगवान तोर आसबे नेमे
येइ भगवान सेइ ये रे नाम जेने राखिस मने।
लिखे ने रे प्राणे।

७५

ए माया प्रपञ्चमय भवरंग मंच माझे
भवेर नट नटवर हरि, यारे या साजान से ताइ साजे।
रंग-क्षेत्रे जीवमात्रे मायासूत्रे सबे गाँथा,
केह पुत्र केह मित्र केह भार्या केह भ्राता।

केउ सेजे एसेछेन पिता,
केउ वा स्नेहमयी माता,
कतो रंगेर अभिनेता,
आसेन सेजे कतोइ साजे।
करिते ए नटेर खेला एबार सेजे एसेछि तनय,
का कस्य परिवेदना आर तखन से कारो नय।
ए नाटकेर एइ अङ्के,
पेयेछि स्थान तोरइ अङ्के,
हय तो याबो पर - अङ्के,
पर अङ्केर पुत्र सेजे।
ना हइले कर्मशेष कतो याइबो कतो आसिबो,
संसारे संसारी सेजे कतो हासिबो कतो काँदिबो।
अहिभूषण अले कबे याबो,
ए ज्वाला कबे नाशिबो,
महायोगे कबे बसिबो,
मिशिबो हरिर पद - रजे॥

७६

एं सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे
हरिर ये चरण अनन्त शरण भय-वारण
ये चरणे बालक वृद्ध गयाय पिण्डदान करे॥
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥
ये चरणे शरण लागि महादेव हलेन योगी,
ब्रह्मा हलेन दम्भत्यागी नारद वैरागी,
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥

ये चरण वामन अवतारे दिलेन हरि बलिर शिरे,
ये चरणे अभय पेये त्रिलोकेर नाथ निस्तारे,
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥

ये चरण परशमणि मा वृथा ऐतो गैलो जाना
कष्टे तोर हलो सोना आछे गो शोना,
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥

अहल्या पाषाणी छिलो परशे मा नवीन हलो
रत्नाकर बाल्मीकि हलो ये चरणे ध्यान करे॥
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥

७७

तुमि मधु तुमि मधु तुमि मधु मधु मधु।
तुमि मधुर निर्झर मधुर सायर आमार पराण बँधु।
(आमार सकलि तुमि) (बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार धर्म अर्थ काम मोक्ष, बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार साधन तुमि भजन तुमि बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार तन्त्र तुमि मन्त्र तुमि बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार जनम मरण धरम करम बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार बलिते याहा किछु आछे बँधु हे आमार सकलि तुमि)
किबा मधुर गीति मधुर कीरति
मधुर मधुर भाष।
किबा मधुर चलनी मधुर चाहनी
मधुर मधुर हास।
(रूपेर कि माधुरी) (मरि मरि रूपेर कि माधुरी)
(रूपेर बालाइ निये मरे याइ रे)

किबा मधुर रूपेर मधुर काहिनी
मधुर कण्ठे गाय।
ऐ नाम शुनिते शुनिते गलिते गलिते
प्राण मधु हये जाय।

(विश्व हय मधुमय) (तखन निखिल विश्व हय मधुमय)
(सकलि मधुर) (तखन या शुनि ताइ सकलि मधुर)

(तखन या बलि ताइ सकलि मधुर)
(तखन या देखि ताइ सकलि मधुर)
(तखन तुमिओ मधुर आमिओ मधुर
या देखि ताइ सकलि मधुर)

(तखन) अनले अनिले जले, मधु प्रवाहिणी चले
मेदिनी हय मधुमय, हय गो।

मधु वाता ऋतायते, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु वायु ये बहे गो, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु क्षरन्ति सिन्धवः मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु सिन्धु उथले ये, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
तखन मधुमत्पार्थिवं रजः, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
तखन मधुकणा धूलिरेणु मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
(तखन) प्रकृति मोहिनी साजे, हृदये मृदङ्ग बाजे,
मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।

बले मधुरं मधुर, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।
बले मङ्गलं मङ्गलं, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।
बले सत्यं शिवं सुन्दरं, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।

(तखन) ये कथा पशे गो काने, ये रूप भाते येखाने,
स्तुति निन्दा सकलि मधुर, हय गो।
तखन गालीओ ये मधु ढाले, स्तुति निन्दा सकलि मधुर
तखन कटु कथाओ मिठे लागे स्तुति निन्दा सकलि मधुर।
तखन वज्रध्वनि कुहुध्वनि, गुरु सोम राहु शनि,
मधु-रसे सकलइ भरपूर, हय गो।
(विश्व मधुमय हये याय) तोमार ऐ रूपे नयन दिले
(विश्व मधुमय हये याय) (मधु-रसे सकलइ भरपूर)।
(मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं—मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं)

७८

(आमार) हृदि-कुञ्ज-दुआर खुले ऐ देखना सई ओ एलो के ?
चिर आँधार कुञ्जे गो मोर ऐमन प्रदीप ज्वाललो के ?
ऐमन प्रदीप ज्वाललो के गो ऐमन आलो करलो के ?
(आमि) ऐके काङालिनी ताय नयनहीना
आमारे तो केउ चेने ना।
(आज) कार चरणेर परश पेये (आमार) प्राणटि नेचे उठेछे।
(आमार) धरटी भरा आबर्जना,
(ताय) नाइको कोनो सेज-बिछाना।
(आर) किबा दिबि सई बसते आसन
(आमार एइ) मरमखाना बिछाये दे।
बसबार छले राङा चरण परश हबे
(आमार एइ) मरमखाना बिछाये दे।
आर कोथाय पाबि तुइ स्वर्ण झारि,
कोथाय वा पाबि तुइ आनते वारि,

(आमार) विराम-विहीन नयनधाराय
(ओ रांगा) चरण दुटि धुये दे
चरण दुटि धुये निये (आमार) एइ रुक्ष केशे मुछे ने।
(आज) यार शुभ आगमने,
फुटलो फूल आमार शुष्क वने,
(आमि) जेनेछि सई प्राणे प्राणे
(आमार) श्याम नागर एसेछे॥

७९

कीर्त्तन

ओरे आय आय आय रे गोपाल, काँदे वृन्दावन,
काँदे कुल-कलङ्किनी याचि दरशन।
सुर हाराये काँदे वेनु, राखाल विहीन काँदे धेनु
पुष्प-हारा काँदे बीथी, काँदे गोपीगण।
तोर विरहे काँदे तमाल, काँदे कदम शाखा,
(आर) कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, झरलो मयूर पाखा,
पड़लो झरे, कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, कृष्ण-हारा वृन्दावने
कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, झरलो मयूर पाखा।
प्रेम-यमुना काँदे आजि, काँदे खेयार पराण माझी,
काँदे माता नन्दराणी हाते लये खीर ननी।
(बले, 'आय रे गोपाल ननी खेये या'।)
बले,—देख रे कतो बैला हलो, गगने आर नाइ रे बैला,
ननी खेये या, आय रे गोपाल, आय रे यादुधन।

८०

भजो गोबिन्द चरणारविन्द
श्याम सुन्दर गोकुलानन्द॥

चन्दन तिलक सुन्दर भाले
वन-फूलहार कण्ठे दोले।
श्रवणे शोभे मणिमय कुण्डल
जागे प्रेम मधुमय छन्द॥
मकर बाँशरी श्रीकरे राजे
मयूर-पाखा शिरे विराजे।
पीतवास सुन्दर कटितट माझे
त्रिभङ्ग वङ्किम नयनानन्द

८१

बलो हरिबोल, बलो हरिबोल
भावना बलो आर कि?
हरे कृष्ण बलो कृष्ण कृष्ण बलो
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, हरे राम, राम बलो
हरे कृष्ण नाम बिने आर सम्बल आछे कि?
हरि नाम मधुमय, हरि प्रेम मधुमय
नामे प्रेमे योग हइले मधुर मधुर हय
हरि नाम निले प्राणे आपनि हय प्रेम-माखामाखि।

८२

हरि नामेर की तुलना आछे बलो हरि वदने
ये नामे हय शमन दमन से हरि नाम निसना कैने।
हरिर नामे प्रह्लाद भक्त अग्नि-कुण्डे हलो मुक्त।
शुधु भक्तिर जोरे।
से ये दयाल हरि दया करे रे रक्षा करेन घोर विपदे,
बलो हरि वदने

मेवे कैलासचन्द्र बले मन रे तुइ रइलि भूले
मिछे मायार तरे
तारे डाकार मतो डाकले परे रे देखते पाबि नयन भरे,
बलो हरि वदने ।

८३

मङ्गलमयेर नाम स्मरो, भवे करो सार
बिने से जीवन बन्धु, के आछे बन्धु तोमार
(अकूल भव-सिन्धु पारे येते, बिने से जीवन बन्धु
के आछे बन्धु तोमार)
पथिके पथिके यैमन, पथे हय किछु काल मिलन,
शेषे ये यार पथे करे गमन
भाई-बन्धु-दारा-सुत जन,केह तोमार नय रे आपन ।
(यारे तुमि भावो आपन) (पथिके पथिके यैमन)
डाको दिन थाकिते दीनबन्धुबले
(एक बार डाको रे तारे) (कि जानि भाई कखन कि हय)
(डाको रे डाको रे)
तोमार मानव जनम वृथाय गैलो
तोमार ऐमन जनम वृथाय गैलो,
तोमार ऐमन जनम आर हबे ना ।
तुमि जनम पेयेछो भालो
हरे कृष्ण हरि बोलो ।
नामे मत्त करो चित्त
मन रे भजो हरि-प्रेमानन्दे
भावो रे माधव मोहन मूरति
(सदा) भजो पद-मकरन्दे । (एकबार डाको रे तारे)

एकबार डाकार मतो डाको रे तारे
ओरे डाकले दया हतेओ पारे
(एक बार प्रह्लादेर मतो डाको रे तारे)
(एक बार ध्रुवेर मतो डाको रे तारे)
डाकले कि आर रइते पारे से ये भक्तेर डाके रइते नारे
से ये भगवान, भक्तेर डाके रइते नारे
नामे मत्त करो चित्त, भजो सत्य-शरण हरि
(से ये) तारण-कारण विपद-वारण जीव-भव-भय-हारी ।
एक बार डाको रे भव-भञ्जने
तोमार-मोह-पाश नाश हबे नाम कीर्त्तने ।
(भावो रे तारे) (भावनार मूरतिखानि एकबार डाको रे तारे)
भावले भावेर उदय हबे, भावो रे तारे ।
एक बार डाको रे भय-भञ्जने
तोमार मोह-पाश नाश हबे नाम कीर्त्तने ।

८४

मन रे मजिये विभवे, भुलिये केशवे थेको ना घुमेर घोरे
(आर थेको ना घुमेर घोरे)
तोमार गोना दिन फुरिये एलो,
जागो रे ओ भाई नगरवासी थेको ना घुमेर घोरे ।
मति राखो हरि-पदे विपदे सम्पदे, मजो रे मजो रे मजो हरिगुणगाने
हृदि चिन्तय भव-भंजन ।
भजो नित्यं सत्यं शान्तं नरकान्त
भजो बुद्धं परिशुद्धं त्रिभुवन-तारणं
हृदि चिन्तय भव भंजनं ।

प्रतिदिन मति चञ्चल गति, गच्छति परमायु
स्थास्यति नहे जीवन मन, यास्यति प्राणवायु
प्राण आर रबे ना, रबे ना, अद्य किम्वा दुदिन परे
देह छेड़े याबे।

(प्राण आर रबे ना, रबे ना।)
आर कबे बा लबि शरण
हेलाय हेलाय बैला गैलो।
निकटे आसिलो विकट शमन।
देह थाकिते स्ववश, नामामृत रस पिवो रे जीव-तारणम्।
हृदि चिन्तय भव-भंजनम्।
ध्यायसि सदा मानस-धन बान्धव-जन-कुलं
चिन्तयसि पावन मधुसूदन-पदमूलम्।
(तुइ भुले ये गेलि रे) (ओ तुइ भुले ये रलि रे)
(ओ तुइ कि करिते कि करिलि) (ओ तुइ कैनोइ वा भवे एलि)
जननी-जठरे यातना पाइये बलेछिलि कर जोड़े
कोथा रले कृपासिन्धु, हरि दीनबन्धु, मुक्त करो कृपा करो
(आमि आर यातना सइते नारि) कृपा करो मुक्त करो)
आमि भूमिष्ठ हइये भजिबो तोमारे गाबो हरिगुण गाथा
एक कथा तखन बलेछिलि बड़ो यातना पेये।
ऐखन भूमिष्ठ हइये भूतले आसिये भुलिलि से सब कथा।
(ओ तुइ भुले ये गेलि रे)
(ओ तुइ कि बलेछिलि, आर कि करिलि, भुले ये गेलि रे)
भजन साधनेर कथा भुले ये गेलि रे (मोह-मुग्ध हये)
(ऐखनो डाकार समय आछे ताँरे डाको रे)
डाको समय थाकिते ताँरे

बलो हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे
(समय थाकिते ताँरे)
श्रवण मनन करो मूढ़ मन स्मर रे व्रज-रञ्जनं
हृदि चिन्तय भव - भंजनम्।

८५

श्रीराधारमण रमणी - मनमोहन वृन्दावन वनदेवा।
अभिनववास रसिक-वर नागर-नागरी-गण-कृत सेवा॥
व्रजपति दम्पति हृदय आनन्द नन्दन नवघन श्याम।
श्रीदाम सुदाम सुबल सखा सुन्दर रामानुज गुणधाम॥
नन्दीश्वर पुर-पुरट पटाम्बर चन्द्रक चारु अवतंस।
गोवर्द्धन-धर धरणी-सुधाकर मुखरित मोहन वंश॥
कालीय-दमन गमन जित-कुञ्जर कुञ्ज-रञ्जित रतिरङ्ग।
गोविन्ददास हृदि मणि-मन्दिरे अविचल मूरति त्रिभङ्ग॥

८६

किषण जिनका नाम है,
गोकुल जिनका धाम है।
ऐसे श्रीभगवान को वारम्वार प्रणाम है।
यशोदा जिनकी मैया है नन्दजी बपइया है।
ऐसे श्रीगोपाल को वारम्वार प्रणाम है।
लूट-लूट दधि-माखन खावे गोवाल बाल सङ्ग धेनु चरावे।
ऐसे श्रीघनश्यामको वारम्वार प्रणाम है।
राधा जो जिनकी जैया है कृष्ण जी कन्हैया है।
ऐसे लीलानाथ को वारम्वार प्रणाम है।

गज और ग्राह का फन्द छुटावे
दौपदी की लाज बचावे।
ऐसे दीनबन्धु को बारम्बार प्रणाम है॥

८७

तुझ से हमने दिल को लगाया
जो कुछ है सब तू ही है।
एक तुझ को अपना पाया
जो कुछ है सब तू ही है।
दिल का सखा सबकी सखी तू
कौनसा दिल है जिसमें नहीं तू
हरि एक दिल में तूने समाया
जो कुछ है सब तू ही है।
तुझ से हमने दिल को लगाया।
क्या मुलायाक क्या इनसान
क्या हिन्दू क्या मुसलमान
जैसा चाहा तूने बनाया
जो कुछ है सब तूही है।
सोचा समझा देखा भाला तू
जैसा ना कोई ढूढ़ निकाला
और यह समझ में जफर की आया
जो कुछ है सब तू ही हैं।

८८

हरि तोमाय डाकि बालक एकाकी
आँधार अरण्ये धाइ हे।

गहन तिमिरे, नयनेर नीरे
पथ खुँजे नाहि पाइ हे॥

सदा मने हय कि करि कि करि
कखन पोहाबे काल विभावरी;—
एइ भये मरि, डाकि हरि हरि
हरि बिने केह नाइ हे॥

नयनेर जल हबे ना विफल
लोके बले तोमाय भकत-वत्सल।
एइ आशा मने करेछि सम्बल
बेचे आछि आमि ताइ हे॥

ए हृदये जागे तोमार आँखि तारा
तोमार भक्त कभु ना हय पथहारा,
ध्रुव तोमाय चाहे तुमि ध्रुव तारा
आर कार पाने चाइ हे॥

८९

प्रसादी, लुम—झिँझिट—एकताला

हरि हे आमार एइ वासना।
आमार हृदय माझे दाँड़ाओ एसे,
वंशीवदन केले सोना।
मनचोरा राखाल वेशे
व्रजेर बालक खेलो एसे
आमार हृदय हउक कदमतला
अश्रुवारि हउक यमुना।

श्याम - कलङ्क अलङ्कारे
चाहि आमि साजिबारे
धरम करम छेड़े चाइ
करिते तोमार साधना।

९०

बाउल—एकताला

हरि दिन तो गैलो सन्ध्या हलो पार करो आमारे।
तुमि पारेर कर्त्ता, जेने वार्ता, ताइ डाकि तोमारे।
आमि आगे एसे, घाटे रइलेम बसे
यारा पाछे एलो, आगे गैलो, आमि रइलेम पड़े।
शुनि कड़ी नाइ यार, तुमि तारे करो पार
आमि दीन भिखारी नाइको कड़ी देखो ना झुलि झेड़े।

९१

सब मिल करो हरि गुणगान।
जा से होय परम कल्याण।
प्रेम से भजो कृष्ण शुभ नाम
जा से होय आनन्द महान॥
ओत प्रोत प्रेमे होय कहाँ से कौन तेरो आछाम।
कौन काहाँ से आयो जगत् में
कबहुँ करो सोइ ध्यान।
परब्रह्म परमेश्वर, जिनकी माया अमित महान।
जिनसे प्रकट भया ए सब जगत्
जानत कोई सुजान।

सब लोक स्थिर रहे, जगत् में रक्षक रहे भगवान।
अन्त होते ही बल मिल जावे
ज्यों सूरज में घाम।
जा से होय परम कल्याण।

९२

"ॐ हरि ओम् तत्सत्"
तुमि हे देवेश परम पुरुष
त्रिगुणे व्याप्त आछो त्रिजगत्।
सन्ध्या पूजा वन्दना, सकलि तोमारि उपासना।
ए महान् विश्व, सुन्दर दृश्य तुमि तो करेछो रचना॥
गंगा भागीरथी सप्त समुद्र ब्रह्मा पुरन्दर तुमि हे रुद्र
तोमाते सङ्कल्प तुमि आदि कल्प
तोमाते सकलि हय प्रभु लिप्त।
विन्ध्य, नीलगिरि, सुमेरु धवल
मन्दार गिरिराज, तुमि हिमाचल
ऊर्ध्व गगने तारका तपने
चन्द्र-किरणे आछो ज्योतिर्वंत्।
तन्त्रे मन्त्रे गीता भागवते
वायु रूपे आछो तुमि जीवन देहेते
तुमि विश्वव्यापी, तुमि बहुरूपी
तोमाके करि प्रभु दण्डवत्।
ॐ हरि ॐ सत्सत्।

९३

इसी तन में रमा जाना, इसी मन में बसा करना,
इसी में रहा करना, बैकुण्ड तो यही है।
मैं मोर बनके मोहन नाचा करूँगी वन में,
तुम श्याम घटा बनकर उस वन में रहा करना।
बन करके हम पपीहा पी पी रटा करूँगी वन में,
तुम स्वाती बूँद बनकर, पियासी पर दया करना।
हम राधे श्याम वन में तुम्हीं को निहारूँगी,
तुम दिव्य ज्योति बनकर नैन नयन में रहा करना।

९४

हो श्याम तुमि, घनश्याम तुम्हीं हो नाथ यशोदा-नन्दन हो
हर श्वास चामर झुलावतवे, गोविन्द हरे गोविन्द हरे।
मिली जावत तुम्हारी नजरों में
जब दिल में मेरे, सिंहासन हो।
(हो नाथ यशोदा-नन्दन हो।)
आदि देव परमेश्वर हो
तुम्हीं अन्तःकरण में भयङ्कर हो
तारा में तू, पुष्प में तू
तेरी प्रतिमा मन-मन्दिर में
तेरी स्तुति नित घर में हो।
(हो नाथ यशोदा-नन्दन हो)।

९५

तेरे पूजन को भगवान्
बना मन-मन्दिर आलीशान।

किसने जानी तेरी माया
किसने भेद तुम्हारा पाया, ऋषि-मुनि करे ध्यान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।
जल में तू ही स्थल में तू ही
मन में तू ही, वन में तू ही, तुम्हारे दिल में मूरतिमान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।
तू हर गुल में, तू हर बुलबुल में
तू हर डाल में तू हर पात में, तू हर दिल में मूरतिमान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।
तू ने राजा रंक से बैठाया
तू ने भिक्षु को राजा बनाया, तेरी लीला इस महान।
बन मन-मन्दिर आलीशान।
झूठे जग की झूठी माया
मूरख इसमें क्या समाया, कर कुछ जीवन का कल्याण
बना मन-मन्दिर आलीशान॥

९६

एहि मुदं देहि श्रीकृष्ण कृष्ण, मां पाहि गोपालबाल कृष्ण, कृष्ण॥ टेक
नन्दगोपनन्दन श्रीकृष्ण, कृष्ण, यदुनन्दन भक्तचन्दन कृष्ण कृष्ण।
धाव धाव माधव श्रीकृष्ण कृष्ण, नव्यनवनीतमाहर श्रीकृष्ण कृष्ण।
कलभगतिं दर्शय श्रीकृष्ण कृष्ण, तव कर्णौ चालय श्रीकृष्ण कृष्ण।
नारदादि-मुनिगेय कृष्ण कृष्ण, शिवनारायण तीर्थवरद श्रीकृष्ण कृष्ण।

९७

भैरवी—कहारवा

मत् कर मोह तू, हरि-भजन को मान रे।
नयन दिये दरशन करने को, श्रवण दिये सुन ज्ञान रे।

वदन दिया हरि-गुण-गाने को, हाथ दिये कर दान रे।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो काञ्चन निपजत खान रे।।

९८

तोमार कर्मे दाओ हे शक्ति, आमार कर्म लओ हे।
तोमार सेवाय लओ हे।
यैनो कामना ना रहे करमेर फले तोमार सेवाय रय हे।
तोमार आदेश तरे मम मन सदाइ मग्न रय हे।
निशिदिन यैनो तोमार मूरति मरमेते आँका रय हे।
या दिबे प्रसाद लइबो सादरे रहिबो येथाय राखो हे।
आमि तोमाय लइया घुरिबो फिरिबो नेहारिबो तोमामय हे।
अर्जुन-रथे सारथी तुमि देह-रथे रथी हओ हे।
तोमाय लइया घुरिबो फिरिबो नेहारिबो तोमामय हे।।

९९

चरण - रजः - महिमा मैं जानी।
यही चरण से गंगा प्रगटी भगीरथ-कुल-तरणी।
यही चरण से विप्र सुदामा हरि काञ्चन धामदिनो।
यही चरण से अहल्या उद्धारी गौतम की पटरानी।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल लिपटानो।

१००

नन्द-नन्दन नवनीत-चोर वृन्दावन मुरारे।
श्याम-सुन्दर मदन-मोहन वृन्दावन मुरारे।
करुणा-सागर कमल-नयन वृन्दावन मुरारे।
चन्द्रवदन सौम्यरूप वृन्दावन मुरारे।
पद्मनाभ पाण्डुरंग वृन्दावन मुरारे।

१०१

हे भवरञ्जन नित्य निरञ्जन संकट-तारण श्रीहरि नमः
अन्तरे विराजिछो नित्य प्रभु
क्षणेक भ्रान्ति-दशे डाकि हे तबु

हे मनो मोहन दाओ मोरे दरशन
आश्वासे जय करो पराण मम।
तुमि विश्व-विमोहन श्याम
तुमि नयन अभिराम राम
तुमि श्याम प्रभु, तुमि राम प्रभु
सकल-पाप-हर नाम प्रभु॥

१०२

एक बेर एक बेर एक बेर बोल योगी
पाँव पड़ूं मैं तेरा।
रे तू करुणाकर कमल-वदन खोल योगी॥

कानन कुण्डल गल बीच माला
माथे मुकुट अनमोल मोल मोल योगी॥

नयनन नेह रस अधर सुधा रस
मुरली करत किलोल हो किलोल योगी॥

जनम जनम की मैं तेरी दासी
कहूँ बजाकर ढोल ढोल ढोल योगी॥

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
मैं चेरी बिन मोल मोल मोल योगी॥

१०३

भैरवी मिश्र—कहारवा

प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम।
कि यैनो लुकानो नामे (ताइ) मिष्ट ऐतो तव नाम।
नाम - रसे डुबे थाकि ब्रह्माण्ड सुन्दर देखि
विश्वे बहे प्रेम-नदी सुधाधारा अविराम।
(तुमि) नामे भुलायेछो यारे से कि येते पारे दूरे
नाम - रसे यें भजेछे से बुझेछे कि आराम।
आमारे भुलायें राखो, हृदि आलो करे थाको,
जीवने मरणे मम तुमि चिर सुखधाम॥

१०४

वसन्त-बहार—एकताला

वृन्दावन कुञ्ज भवन नाचत गिरधारी।
धर धर धर मुरली अधर भर भर स्वर मधुर मधुर।
कर कर नटवर स्वरूप सुन्दर सुखकारी॥
घन घन घन बाजत ताल ठुम ठुम ठुम चलत चाल।
चरणन छन छन छन छन नूपुर धुन प्यारी।
घिर घिर घिर करत गान फिर फिर फिर देत ताल॥
मिल मिल मिल रचत रास संग गोप नारी।
वद वद वद वदन चंद हस हस हस हसन मन्द।
ब्रह्मानन्द नन्द नन्द नन्दन बलिहारी॥

१०५

जैसे राखहु ऐसे हो रहूँ।
जानत हो सुख दुख सब जनके मुख से काह कहो॥

कबहुक भोजन लहो कृपानिधि कबहुक भूख सहो।
कबहुक चढ़ तुरङ्ग महागज कबहुक भार बहो॥
कमल नयन घन श्याम मनोहर अनुचर भार बहो।
सूरदास प्रभु भक्त कृपानिधि तुम्हारि चरण गहो॥

१०६

कैसे पार लगाऊँ मेरे जीवन-नैया को भगवान।

नदिया गहरी बोझ कठिन है, तूफान उठा अति भारी,
डगमग डोले नैया मेरी तीर न पाऊँ निहारी।

छा रही घनघोर घटा, तूफान उठा अति भारी,
है अनाड़ी केवट हारा नाव परा मझधारी।

हे अनाथ नाथ आओ, अपनि करुणा हाथ बढ़ाओ,
नैया मेरी पार लगा दो केवल आश तुम्हारी।

१०७

झूलत नन्द-किशोर, प्रेम रंग में धोरी तरंग में
होवत प्रेम विभोर।

श्याम झूलत झूलत श्यामचारी
गीति गावत मिलके द्विज-नारी
झूलत झूलत झूलत झूलत निशि भरि भोर।

चन्द्र देखत देखत तारे राधा सङ्ग में प्रीत दुल्हरे
श्याम गले रहे लिपटी राधा
राधा गले रहे लिपटे माधव
दुहुँ देखत दुहुँ ओर।

१०८

अकूल भव-सागर-वारि पार हबि के आय रे आय।
भव-तारण आमावे पार नाहि हबे
समय फुराबे अवहेलाय।
दशजन इन्द्रिय दशजन द्वारी कमगुण दोषे जोरे चलाय।
आमि उच्च आशाय पाल तुले दियेछि
हरि कृपा पवने बेगे धाय।
अन्ध आतुर अनाथ निराश्रय पापी-तापी आछे के कोथाय
काण्डारी श्रीहरि बिने
आमार भग्न तरी भेसे याय।

१०९

यदि एसे थाको हरि निये नामेर तरी
आमारे निओ पार करिया।
नाइ कोनो सम्बल नाइ कोनो भक्तिबल
पड़ेछि दुर्बल हइया॥
यदि ना नेओ तरीते तुलिया
आमि दाँड़ धरि याबो भासिया
यखन दिबे गो तरी छाड़िया।

११०

नन्द घरे आनन्द भयो
डगर डगर दीप ज्वले चलो गोकुल (सजनी चलो····)
जगत-पालक जन्म लियो रूप रङ्ग महाभाग
गोवाल-बाल सङ्ग लाल नाचे गोप देते ताल।
यमुना तीर अति अधीर तास हेत सजनी-तीर
वसुदेव डरत काँपत कान्हा जाने प्रेम गीर।

मोतियन से चौक सजे खोल-शाँख-मृदङ्ग बजे।
ठुमक चलत नन्दरानी सखी गारे मधुर गीत॥

१११

श्याम सुन्दर मदन-मोहन जागो मेरे लाला।
प्रातः भानु प्रगट भयो गोवाल बाल मिलन आयो
तुम्हारी दरश दुआर ठारे मोहन वंशीवाला॥

११२

श्याम हे घनश्याम ओ तुम तो प्रेम के अवतार हो।
सङ्कट में फँस रही हूँ तुम ही के अपहार हो।
चल रही आँधि भयानक, जवार में नैया पड़ी।
थामले पतवार गिरवरधर जो बेड़ा पार हो।
नगन् पद गाज के रोदन पर दुरणेवाले प्रभु।
देखना निष्फल ना मेरी असोर की धार वह।
आपको दरशन बूझे इन छबि से वारम्वार हो।
हाथ में मुरली मुकुट शिर पर, गले में हार हो।

■

श्रीशिव संगीत

१

प्रभाती—एकताला

निशा अवसाने प्रेमेर आसने के तुमि देवता बसिया।
(तोमार) वदन कमले अपरूप ज्योतिः
उठियाछे उद्भासिया॥
ध्यान-स्तिमित अर्धनिमीलित नयन युगल राजिछे,
(यैनो) आपना हाराये आपनारे पेये
आपनारे लये मजेछे॥
विराजिछे एक आपन महिमा
अन्तर निज हारायेछे सीमा॥
गम्भीर धीर नीरव प्रेम वदने रयेछे हासिया॥
किवा ओ तनुर शुभ्र सुषमा
शेखरेते ऐ शोभे चन्द्रमा।
गहन जटार आड़ाल भेदिया
गंगा नेमेछे आसिया॥
कि तव दीप्ति कि तव शान्ति
कल्याणमय दिव्य कान्ति,
विगलित तव करुणा विश्वे तुच्छता याय भासिया॥

२

इमन कल्याण—त्रिताल

सदा शिव भजो मन निशिदिन।
ऋषि-निधि-दायक विनत-सहायक
काहे ना सुमिरत फिरत अनवरत सदाशिव॥
शङ्कर भोला पार्वतीरमण
सित तनु पन्नग-भूषण अनुपम॥

३

वसन्त—तेवरा

डमरू हर करे बाजे बाजे।
त्रिशूल-धर अंग-भस्म-भूषण व्याल-माला गले विराजे।
पञ्च वदन पिनाकधर शिव, वृषभ वाहन भूतनाथ,
रुण्ड मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर हे।

४

ताथैया ताथैया नाचे भोला बम बम बाजे गाल।
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे, दुलिछे कपाल-माल॥
गरजे गंगा जटामाझे, उगरि अनल त्रिशूल राजे।
धक् धक् धक् मौलिबन्धा ज्वले शशाङ्क भाल॥

५

कि आर बलिबो बलो हे मोर प्रिय
शुधु तुमि ये शिव ताहा बुझिते दिओ।
बलिबो ना रेखो सुखे, चाहो यदि रेखो दुखे
तुमि याहा भालो बोझो ताइ करियो।

ये पथे चालाबे निजे चलिबो चाबो ना पीछे
आमार भावना प्रिय तुमि भाबियो।
सकले आनिलो भाला भकति चन्दन माला
आमार ए शून्य थाला तुमि भरियो॥

६

दरबारी कामाड़ा—झाँपताल

गौरांग अरधांग गंगा तरंगे
योगी महायोग का रूप राजे।
बाघछाल मुण्डमाल शशीभाल करताल
ता डेक डिमि डिमिक डिमि डमरू बाजे।
अम्बर बाघाम्बर दिमम्बर जटाजूट फणिधर
भुजंगेश अंग विभूति साजे।
वाणी विलास तुमा धाता विधाता
याता सकल दुख सदाशिव बिराजे॥

७

मिश्र—एकताला

प्रलय नाचन नाचले यखन आपन भूले,
हे नटराज, जटार बाँधन पड़लो खुले।
जाह्नवी ताइ मुक्त धाराय, उन्मादिनी दिशे हाराय
संगीते तार तरंगदल उठ्लो दुले।
रविर आलो साड़ा दिलो आकाश पारे,
शुनिये दिलो अभय वाणी घर-छाड़ारे।
आपन स्रोते आपनि माते, साथी हलो आपन साथे
सब-हारा ये सब पेलो तार कूले कूले।

८

भैरवी—दादरा

नाचे पागला भोला बाजे बम बम बम।
सिंगा बाजिछे भों भों भम भम भम॥
शिरे करिछे गंगा कल कल कल,
चरण चापेते धरा टल टल टल,
मृदङ्ग धरे ताल ताथम ताथम॥
डिम डिम डिम डमरू बाजे
फन फन फन फणी गरजे
नाद उठिछे सोऽहम् सोऽहम्॥

९

नेचेछो प्रलय-नाचे हे नटराज, नेचेछो।
ताथै ताथै बाजे गाल बबम बबम
हाते बाजे डमरू ऐ।
अतीतेर हाड़माला विराटेर गले दोले
नाचनेर ताले जटार से जटिल बाँध खोले;
आजि एइ मुक्ति-हारार नयनेर भीति भेंगेछो।
नयनेर वह्नि-शिखा असहाय सृष्टि नाशि,
ललाटे आशार आलो ऐ शिशु शशीर हासि,
प्रलय लीलार माझे डाके मा भैः मा भैः।

१०

केदारा—कौवाली

जय शिव शङ्कर हर त्रिपुरारी, पाशी पशुपति पिनाकधारी।
शिरे जटाजूट कण्ठे कालकूट साधक-जनगण-मानस-विहारी॥

त्रिलोक पालक त्रिलोक नाशक, परात्पर प्रभु मोक्ष विधायक।
करुणा नयने हेरो भकत जने लयेछि शरण चरणे तोमारि॥

११

बेलपाता नैय माथा पेते, गाल बाजाले हय खुशी।
मान अपमान समान तो तार, तार काछे नय केउ दोषी।
ऐतो सो भूले थाके नेचे आसे ये ताय डाके
'बम भोला' बोल बले कैनो लओ ना येचे या खुशी।
या फेले दैय नैय से बेछे भाल मन्द नाइ हुँश-इ॥

१२

झिझिट—एकताला

भांग खेये विभोर भोलानाथ भूतगण सङ्गे नाचिछे।
सदा काली काली काली बले मधुर डमरू बाजिछे।
शिरते शोभिछे जटाजूट फणि
ललाटे शोभिछे देवी मन्दाकिनी
चरण प्लाविया भूधर धरणी कुलु कुलु ध्वनि करिछे।

बामेते शोभिछे भुवन माता
कि कबो रूप कि कबो कथा
चारिपाशे हेम-लता जड़ित जड़ित रयेछे।

कर्णेते शोभिछे धुतुरार फूल
धुतुरार पाने आँखि ढुलु ढुल
काली ध्याने व्याघ्र-चर्म खसिया खसिया पड़िछे।

१३

आजु मम भवन योगी आवे
करे लिये वीणा हरिगुण गावे
अङ्गे विभूति कान में कुण्डल
शीष जटापर फणिगण शोभे।

१४

देह ज्ञान दिव्य ज्ञान देह प्रीति शुद्धा प्रीति
तुमि मङ्गल आलय तुमि मङ्गलमय
धैर्य देहो वीर्य देहो तितिक्षा सन्तोष देहो
विवेक वैराग्य देहो देहो ओ पदे आश्रय।

१५

शिव शिव बलो जीव घुचिबे अशिव सब
शिव नाम भरसा करि विश्व पालेन केशव
विरिञ्चि करेन सृष्टि शिव पदे राखि दृष्टि
काल चक्र ग्रह रिष्टि शिवनामे पराभव।

शिव ए विश्वेर सार ज्ञान गुरु विश्वाधार
शिव बिना नाहि आर निस्तार कारण।
अतएव शिव नाम गान करो अविराम
पाइबे परम धाम नामेर गुण कि कबो।

१६

शिवमय ए संसार ओरे जीव ता कि जानो ना।
प्रकृति प्रभावो शिवे करिछो जीव-कल्पना।

यइ जीव सेइ शिव येइ शिव सेइ जीव
शिव भिन्न नहे जीव यथा जले बिम्बफेना।
शिव हते एइ जीव एइ जीव हय शिव
शिव पद पाय जीव शिव भाबिये
अतएव ओरे जीव सदा भावो सदाशिव
आज जीव हृदे शिव कि आर बलो भावना।

१७

नाचत शिव सुन्दर त्रिलोचन जटाधारी।
पिनाकपाणि बाघाम्बर गंगाधर श्मशानचारी।
योगीश्वर महाकाल अर्द्धचन्द्र-शोभित भाल।
नाचत डमरू-कर नटेश्वर त्रिपुरारी॥

१८

शंकर शिव पिनाकी गंगाधर वृकधर
वामदेव ईश्वर डमरू-कर।
भस्म अंग शोभित भुजंग भाले चन्द्र
शिङ्गि कूकत है भोला दिगम्बर॥
तिलक ललाट गले रुण्डमाला
त्रिनयन वरदाता गौरी संग त्रिशूल धरे।
पशुपति विश्वनाथ मृत्युञ्जय
महादेव नाम हर हर॥

■

श्रीशक्ति संगीत

प्रभाती—झपताल

जागो रे जागो रे मन घुमाये थेको ना रे।
देखो आजि के एसेछे कोले निते तोमारे॥

एसेछे बासिया भालो घुचाते मनेर काली।
ज्वालिते बुकेते आलो, लइते आपन घरे॥

यौर साड़ा प्राणे प्राणे, यौर प्रेम गाने गाने।
आजि ए कि हलो देखि से एसेछे ए दुआरे॥

धराते से धरा दिलो हये बड़ो आपनार।
सहिबारे कतो भूल बहिबारे कतो भार॥
एसेछे आनन्दमयी, मधुमयी, प्रेममयी।
ए घोर भाङ्गिया मायेर मुख पाने चाहो रे॥

■

श्री गौर निताई संगीत

१

निताइ काण्डारी करुणा वितरि,
हरि नामेर तरी नियाछे एबार।
यदि चाओ तरिते, ओठो से तरीते
त्वरिते, हइबे भव-सिन्धु पार॥

दयार माझी नाय, के याबि रे आय,
उत्तम अधम किछु करे ना विचार।

ये जन हरि बले, तारेइ नैय रे तुले
बिनामूल्ये पार करे अनिवार ॥

२

आमि देखेछि रे ताय ।
गौर-वरण संन्यासी एक एसेछे हेथाय ।
(ताँर) हरि बलते नयन झरे,
आपनि कँदे काँदाय परे,
रूपे भुवन पागल करे,
आपन मने गाय ॥
(बले, "कोथाय श्याम-राय ।")
हेरिया गगने घेरा नव जलधर,
मेघेरे डाकिये बले,—"हे मुरलीधर,
देखा यदि नाहि दिबे, कैनो गो बाजाले बाँशी ?
तुम कि जानो ना नाथ, आमि चरणेर दासी ।"
बलिते बलिते काँदे, धूलाते मूरछा जाय ॥

३

एसो हे गौरांग हरि आमार हृदय माझारे ।
आमि शक्ति-शून्य भक्ति-शून्य किसे पाबो तोमारे ।
आमि साधन-शून्य-भजन-शून्य किसे पाबो तोमारे ॥

४

कीर्त्तन—एकताला

ओ के गान गेये गेये चलो जाय (देखो) पथे पथे ऐ नदीयाय ।
ओ के नेचे नेचे चले, मुखे हरि बले,
ढले ढले पागलेरइ प्राय ॥

ओ के जाय नेचे नेचे आपनाय बेचे पथे पथे शुधु प्रेम येचे येचे ।
ओ के देवता-भिखारी मानव-दुआरे,
देखे जा रे तोरा देखे जा ॥
ओ से बले "के तो केउ पर नाइ" ओ से बले
"सबाइ ये निज भाई" ॥
ओ से बले "शुधु हेसे शुधु भालोबेसे
(आमि) भ्रमि देशे देशे एइ चाइ ॥
ओ के प्रेमे मातोयारा, चोखे बहे धारा,
केंदे केंदे सारा कैनो भाई,
सब द्वेष हिंसा छुटि, आसि पड़े लुटि
(तार) धूलि माखा टुटि राँगा पाय ।
बले छेड़े दाओ मोदेर, मोरा चले जाइ,
नइले प्रभु तोमार प्रेमे मले जाइ ।
ए ये नूतन मधुर प्रणयेर पुर,
हेथा आमादेर कोथा ठाँइ ? (प्रभु)
ऐ नरनारी सब पीछे धाय, (ओइ) जयध्वनि ओठे नीलिमाय ।
तोरा आय सबे चले, मुखे हरि बले,
तोदेर छेड़ा पुँथि फेले चले आय ॥

५

बाउल—कहारवा

देखे एलाम तरुण उदासी
केंदे केंदे पथे चले जाय ।
कोटि चाँदेर सुधा निङ्गारिया गो
बलो के गड़ेछे ताय ।

काङ्गाल तारे के करेछे बलो ?—
घरणी आर मा बुझि तार धरणी भासाय।
नयन तार कालार मतन बाँका
धनुर मतन भुरु तायन, येनो तुलिर आँका।
आमि तारे देखे केंदे मरि गो
आमार एकि हलो दाय।
कोन पथे से गैलो चलि
बले दे आमाय।
आमार जीवन यौवन धरम करम गो
आमि सँपेछि तार पाय॥

६

आमार जाय जाबे प्राण, जाक् ना कैनो
यदि गौर पाइ।
आमाय बले बलुक लोके मन्द
ताते क्षति नाइ।

(आमि) निशीथे घुमाये थाकि
गौर रूप स्वपने देखि,
जागिया देखिलाम गौर नाइ॥

अङ्गे गौर, सङ्गे गौर, गौर जगत्मय
दिवा निशि गौर बले काँदिया बेड़ाइ।
जल आनिते गांगेर घाटे
जलेर छायाय देखिलाम ताके
आमार मन प्राण नियाछे हरे
कैमने घरे जाइ॥

७

बले दे नदे-वासी के देखेछिस् तारे
प्राण कानाई भाई आमार एइ नदीया पुरे।
यमुनार विमल तटे
गो-पाल लये जेतो गोठे
बाजिये बाँशी मधुर हासि पागल करा सुरे।
प्रेम ऋणे ऋणी हये
कालोवरण ताइ लुकाये
नयन जले शुभ्रबे बले एलो सुरधुनी तीरे॥

८

आमार गौरांग-सुन्दर नाचे नाचे रे।
ता ता थैया थैया बाजे बाजे रे॥

नाचे नाचे विश्वम्भर, नाचे सबार ईश्वर।
सुरधुनीर तीरे तीरे फिरे रे॥

महा-हरिध्वनि चारिदिके शुनि।
माझे शोभे द्विजराज रे॥

सोनार कमल करे टलमल
प्रेम सरोवर माझे रे॥

हासिया हासिया श्रीभुज तुलिया
मुखे 'हरि हरि' बले रे॥

९

चम्पक शोन, कुसुम कनकाचल
जितल गौरतनु लावणी रे।

उन्नत ग्रीव सीम नाहिं अनुभव
जग - मन - मोहन भाङ्गनी रे ॥

जय शची-नन्दन त्रिभुवन वन्दन
कलियुग-काल-भुजग-भय-मण्डन रे ॥

विपुल पुलक फूल, आकुल कलेवर
गर गर अन्तर प्रेमभरे ॥

लहु लहु हासनी गद गद भाषणी
कतो मन्दाकिनी नयने झरे ॥

निज रसे नाचत नयन ढुलावत
गावत कतो कतो भकतहिं मेलि ।
जो रसे भासि अवश महीमण्डल
गोविन्ददास तँहि परश ना भेलि ॥

१०

नीरद नयाने नव घन सिञ्चने
पूरल मुकुल अविलम्ब ।
स्वेद मकरन्द बिन्दु-बिन्दु चयत
विकसित भाव कदम्ब ॥

कि पेखनु नटवर गौर किशोर ।
अभिनव हेम कल्पतरु सञ्चरु
सुरधुनी - तीरे उजोर ॥

चञ्चल चरण कमलतले झङ्कारु
भकत भ्रमणगण भोर ।
परिमल लुब्ध सुरासुर धावइ
अहर्निशि रहत अगोर ॥

अविरत प्रेम रतन फल वितरणे
अखिल मनोरथ पूर ।
तार चरणे दीन-हीन वञ्चित
गोविन्ददास बहु दूर ॥

११

शचीर कुमार गौरांग सुन्दर
देखिलाम आँखिर कोणे ।
पलकेते चित हरिया लइलो
अरुण नयन - वाणे ॥

सई शोन गो कहि लो तोरे ।
धरेते जाइते प्राण नाहि सरे
आकुल करिलो मोरे ॥

हासिया हासिया नाचिया नाचिया
'हरि हरि' बले जाय ।
घुरिया घुरिया मातिछे भ्रमर
देखे आलो, सखी आय ॥

कि कहिबो आर कि क्षणे देखिनु
धैर्य बाँधे ना मोरे ।
निरवधि हाय चित्त व्याकुल
नयन सदाइ झरे

१२

कि लागि गौर मोर ।
निज रसे हलो भोर ।

अवनत करि मुख।
भाविछे पूर्वेर दुख।
विधि निष्करुण हलो
अर्द्ध निशि बये गैलो
ज्ञानदास कहे गोरा
निजरसे हलो मोरा॥

१३

अपरूप गोराचांदे।
विभोर हइया राधार प्रेमे
तार गुण कहि कांदे॥
नयने गलये प्रेमेर धारा,
पुलके पुरलो अंग।
खने गरजये खने से कांपये
उथले भाव - तरङ्ग॥
पारिषद्‌गणे कहये यतने
राधार प्रेमेर कथा।
ज्ञानदास कहे गौरांग नागर
ये लागि आइला हेथा॥

१४

श्रीकृष्ण - चैतन्य बलराम-नित्यानन्द
पारिषद संगे अवतार।
गोलोकेर प्रेमधन सबारे याचिया दिलो
ना लइनु मुइ दुराचार॥

आरे पामर मन बड़ो शेल रहिलो मरमे।
एहेन कीर्त्तन रसे त्रिभुवन मातल
वञ्चित मो हेन अधमे॥

१५

हरि बले बाहु तुले नेचे आय।
पतित पावन गौरहरि, राखबे तोरे रांगा पाय।
गौर नाचे निताई नाचे, श्रीवास आँगिनार माझे
जगमाधा दु' भाई नाचे नेचे नेचे प्रेम बिलाय॥

प्रेमे मत्त हये गोरा, मुखे बले रा, रा, रा, रा
दुनयने बहे धारा, धाराय अङ्ग भेसे जाय॥

आनन्दे दुइ बाहु तुले, जय राधा श्रीराधा बले,
क्षणे हासे क्षणे कांदे धूले गाड़ागड़ि जाय॥

मनमोहन कय नामेर काछे, ए जगते कि धन आछे,
नामे रुचि यार हइयाछे, दूरे गैछे शमन दाय॥

१६

तोरा के के जाबि आय, नदियाय भाई,
भव पारे निये जेते, डाके रे दयाल निताई।
निताई हरि बले, डाके दुइ बाहु तुले
वक्ष भासे चक्षेर जले, प्रेमानन्दे नाचे गाय।
निताई परम दयाल, पापी तापीर लेगेछे कपाल,
मार खेये प्रेम याचे निताई डाकछे बले आय रे आय।
महा पापीर परित्राणे, निताई हरि गुणगाने,
यारे यारे धरे टाने, कोल दिये कय हरि बल भाई।

नामे प्रेम उथले मने, दयाल निताई नामेर गुणे,
तराइल जगजने, साक्षी रहल जगाइ माधाइ।

१७

धवल पाटेर जोड़ परेछे, रांगा रांगा पाड़ दियाछे
चरण ऊपर दुलि जाइछे कोंचा।
झल-मल सोनार नूपुर, बाजाइछे मधुर मधुर
रूप देखिते भुवन मूरछा॥

दीघल दीघल चाँचर चुल, ताय दियाछे चाँपार फूल
कुन्द मालतीर माला - बेड़ा झोंटा।
चन्दन माखा गोरा गाय, बाहु दोलाइया चले जाय
ललाट ऊपर भुवन-मोहन फोंटा॥

मधुर मधुर कय कथा, श्रवण मनेर घुचाय व्यथा
चाँद यैनो उगारये सुधा।
बाहुर हेलन दोलन देखि, करीर स्वन्त किसे लिखि
नयान बयान यैनो कुँदे कोंदा॥

एमन केउ व्यथित थाके, कथार छले खानिक राखे,
नयन भरे देखि रूपखानि।
लोचनदास बले "कैने नयन दिलि गौर पाने,
कुल मजालि आपना आपनि॥"

१८

भजन—कौवाली

सुन्दर लाला शची - दुलाला नाचत श्रीहरि कीर्तन में।
भाले चन्दन - तिलक मनोहर अलका शोभे कपोलन में॥

शिरे चूड़ा दरज्ञ निराले वनफूलमाला हिया पर दोले।
पहिरण पीत पटाम्बर बोले रुनुझुनु नूपुर चरण में॥
कोई गावत पञ्चम तान, कृष्ण मुरारी हरि के नाम।
मङ्गल ताल मृदङ्ग रसाल बजावत कोई रङ्गन में॥
राधाकृष्ण एकतनु होये, निधुवन में जो रङ्ग मचाये।
विश्वरूप के प्रभुजी सोई अबतो प्रगट है नदिया में॥

१९

भजो गौराङ्ग जपो गौराङ्ग लहो गौराङ्गेर नाम रे।
ये जना गौराङ्ग भजे से जाय गोलोकधाम रे।
से जाय गोलोकधाम रे, से हय आमार प्राण रे।
अक्रोध परमानन्द निन्यानन्द राई रे।
अभिमान-शून्य निताई नगरे बेड़ाय रे।
यारे पाय तारे कहे दन्ते तृण धरि।
आमारे किनिया लहो बलो गौर हरि॥
प्रकट - अप्रकट लीला दुइ तो विधान रे।
प्रकट लीलाय करने प्रभु निजेर इष्ट नाम रे।

२०

एसो दुटि भाई गौर निताई
एसो दुटि भाई गौर निताई
द्विजमणि द्विजराज हे।
पूजिबो चरण एइ आकिञ्चन
राखिया हृदय माझे।
पूजिबो चरण—
चन्दन तुलसी दिया पूजिबो चरण—।

एसो द्विजमणि द्विजराज हे
द्विजमणि द्विजराज।

गौर एसो हे गौर एसो हे
(गौर एसो हे···· ···· ····)
एसो हे एसो हे
(एसो हे···· ···· ···· ····)
गदाधरके संगे निये एसो हे एसो हे।
तोमार सांगोपांग संगे निये एसो हे एसो हे।
गदाधरके संगे निये आसते हबे हे
(ए आसरे ठाकुर आमार आसते हबे हे)
आसते हबे हे।

दयालेर शिरोमणि आसते हबे हे
करुणार सागर गौर आसते हबे हे
दयाल ठाकुर गौर आमार आसते हबे हे
आसते हबे हे।

तुमि ना आसिले कीर्त्तन शोभे ना शोभे ना।
एसो हे एसो हे।

कीर्त्तनेर शिरोमणि एसो हे एसो हे।
कीर्त्तनेर नाचोआ ठाकुर एसो हे एसो हे।
कीर्त्तनेर नाटोआ ठाकुर एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे।
(प्राण गौर नित्यानन्द·····)
गौर हरि बोल गौर हरि बोल
हरि हरि बोल

गौर हरि बोल।
हरि बोल हरि बोल
गौर हरि बोल गौर हरि बोल
हरि हरिबोल हरिबोल हरिबोल
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

२१

सुरधुनीर तीरे ओ के हरि बले नेचे जाय।
जाय रे काँचा काँचा सोनार वरण चाँदेर किरण माखा गाय।
शिरे चूड़ा शिखि-पाखा राधा नाम सर्व अंगे लेखा
तार नयन बाँका, भङ्गि बाँका बाँका नूपुर रांगा पाय।
से तो नय देखछि यारे विमल यमुनार तीरे
(से तो) एमनि करे बाँशी धरे मजाइत गोपिकाय।
विश्वरूप कहे फुकारि चिनि चिनि मने करि
(ओ तार) वरण देखे चिनते नारि स्वभावे पाइ परिचय।

२२

गौरा आर किछु बले ना रे
शुधु हरिबोल हरिबोल हरिबोल।
देखे एलाम शांतिपुरे श्रीअद्वैतेर घरे
ता था तै ता था तै बाजिछे खोल
नव नव नव बालक सङ्गे
गौर नाचिछे प्रेम तरङ्गे
शचीसुत गोरा प्रेमे मातोयारा
यारे देखे तारे दिछिछे रे कोल।

चन्दने चर्चित श्रीअङ्ग लेपितो
गलाय मालती माला रे
गोराचाँद दरशने राहुर मनेते लेगेछे रे गोल।

२३

करुणा सागर ठाकुर मोर नित्यानन्द राय रे।
अदोष-दरशी ठाकुर आमार नित्यानन्द राय रे॥
निताई देवेर दुर्लभ श्रीहरिनाम,
यतो पातकी देखिया बाछिया बाछिया याचिया याचिया दैय रे।
(पतित पावन निताई आमार)
निताई, हरिनामेर तरी करि
बले—के जाबि रे पारे, आय त्वरा करे
कर्णधार आमि आछि रे।
(भव पारे जेते कर्णधार आमि आछि रे)
निताई यारे देखे तारे-इ बले, एबार बिना मूल्ये पार करिबो।
बल भाई हरे कृष्ण हरे हरे
तोदेर यतो भार सकलि आमार
दायभागी रहिलाम आमि रे।
(तोदेर जन्म जन्मातरेर कर्माकर्मेर दायभागी)
निताई जीवेर लागिया काँदिया काँदिया ऐ बुझि ऐ जाय रे।
(आमार दयाल निताई ऐ बुझि ऐ जाय रे)
प्रेमेर ठाकुर हरिबोल बले ऐ बुझि ऐ जायरे
(नयन जले भेसे जाय रे) (जीवे हरिनाम लय ना बले)
दुटि करुण आंखि अरुण हयेछे जीवेर दुःखे कँदे कँदे।

सेइ अरुण नयन कोणे यार पाने चाय
कृष्ण - प्रेमानन्द - रसे ताहारे भासाय
सेइ भेसे जाय जार पाने चाय।

२४

रूपे भुवन आलो करेछे गो,
(कतो) चाँद खसे तार पदे शरण नियेछे
प्रति पदनखे कतो चाँद झलके गो,
आछे कालाचाँद तार भितरे।
गा ढाक्‌ले कि आर स्वभाव चापा जाय
आँका-बाँका चलन चालन आर बाँका नयने चाय
भाव भङ्गीते आर इङ्गिते गो
देखो परिचय सब मिल करे।
यन्त्रे राधा नामटि कभु गाय
(आबार) एक पद दिये हेलिये दाँड़ाय
(तोरे) बलबो कि से एमनि हेसे गो
कभु बाँशी धरे अधरे।
यदि देखलि पुनः देख ना जेने ना
दास विश्वरूप ओरूप देखते कच्छे कि माना,
जा रूप देखे आगे प्राण सँपे आय
(तार) गुणेर खबर निस् परे।

२५

कलि - तिमिराकुल अखिल लोक देखि
वदन चाँद परकाश।

लोचने प्रेम सुधारस बरिखये
जगजन-ताप-विनाश ।
गौर करुणा-सिन्धु अवतार ।
निज नाम गाँथिया नाम चिन्तामणि
जगते परायल हार ।।

भकत - कल्पतरु अन्तरे अन्तरु
रोपाये ठामहि ठाम ।
तव पदतले अवलम्बन पथिक
पूजये निज निज काम ।

भाव गजेन्द्र चढ़ायल अकिञ्चने
ऐछन पँहुक विलास ।
संसार कालकूट विषे दगधल
ए कलि गोविन्ददास ।।

२६

यादेर हरि बलते नयन झरे
ताराइ दु'भाई एसेछे रे,
यारा मा यशोदार नयनतारा
तारा दु'भाई एसेछे रे,
ओरे, यारा व्रजेर कानाई बलाई
ताराइ दु'भाई एसेछे रे ।
कलि-जीवेर दशा मलिन हेरे
तारा पातकी तराबे बले,
यारा मारा खेये प्रेम याचे
ताराइ दु'भाई एसेछे रे ।

२७

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दया करो मोरे हे ।
दया करो मोरे प्रभु, कृपा करो मोरे हे ।
(भजन जानि ना हे)
(आमि) जनमे जनमे तोमाय ना पासरि हे ।
(प्रभु आमार इहाइ करो हे)

पतित पावन हेतु तव अवतार ।
मो सम पातकी प्रभु पाइबे ना आर ।।
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्द सुखी ।
कृपा अवलोकन करो आमि बड़ो दुखी ।।
दया करो सीतापति श्रीअद्वैत गोसाईं ।
तव कृपा बले पाइ श्रीचैतन्य निताई ।।
आहा स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ ।
भट्टयुग श्रीजीव प्रभु लोकनाथ ।।
दया करो श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास ।
रामचन्द्र संग माँगे नरोत्तम दास ।।

२८

आय रे जगाई, माधाई आय ।
हरि संकीर्त्तने नाचबि यदि आय ।।
मेरेछिस् ताय भय कि आछे, आय ।
(ओरे मेरेछिस् कलसीर काना)
(माधाई, ताते किछु क्षति नाइ रे)
(माधाई, ता बले कि प्रेम दिबो ना ?)
(ओरे जगाई माधाई)

एकबार मार खेयेछि, ना हय आबार खाबो
ओ भाई, तबु हरिनाम निबो।
ओरे, आमरा दु'भाई गौर निताई।
तोमरा दु'भाई जगाई माधाई।
ओरे ओरे माधाई।
आज दु'भाईके तराबो दु'भाई।
आय रे माधाई काछे आय—
हरि-नामेर बातास लागुक गाय।
(ओरे) माधाई तोदेर स्नान कराबो गंगाजले
हरि-नामेर माला दिबो गले॥

२९

गौरांग बलिते हबे पुलक शरीर।
हरि हरि बलिते नयने बहिबे नीर॥
(से दिन कबे वा हबे हे)
(कँदे कँदे बेड़ाइबो—)
आर कबे निताईचाँद करुणा करिबे।
(आमाय कांगाल देखे हे)
संसार-वासना मोर कबे तुच्छ हबे॥
(आमार से दिन हबे कि हबे?

एइ कु—

विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन।
कबे हाम हेरबो श्रीबृन्दावन॥
(श्रीराधाकृष्णेर विलास-भूमि)

रूप रघुनाथ बलि हइबो आकुति।
(यारा युगल-पीरिति-तत्त्व बुझेछे रे)
कबे हाम बुझबो से युगल पीरिति॥
(हैनो भाग्य कबेइ वा हबे हे—)
रूप रघुनाथ पदे रहूँ मोर आश।
(आर किछु चाइ ना, चाइ ना)
प्रार्थना करये सदा नरोत्तम दास॥

■

विविध संगीत

१

हे जगत्त्राता, विश्वविधाता, हे सुख-शान्ति-निकेतन हे,
प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो, दुःख-दारिद्रय-विनाशन हे।
नित्य, अखण्ड, अनन्त, अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे।
जग-आश्रय, जगपति, जगवन्दन, अनुपम-अलख-निरञ्जन हे।
प्राणसखा, त्रिभुवन - प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे॥

२

बाग-हाहिर—ताल रूपक

नहिं ऐसो जनम बारंबार।
क्या जानूँ कछु पुण्य प्रकटे मानुसा अवतार।
बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत न लगे बार।
बिरछ के ज्यों पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार॥
भवसागर अति जोर कहिए, विषय ओखी धार।
सुरत का नर बांधे, बेड़ा बेगि उतरे पार।
साधु सन्ता ते महन्ता, चलत करत पुकार।
दासी मीरां लाल गिरिधर, जोबना दिन चार॥

३

भीमपाल श्री—यत्

ठाकुर मेरे प्रीतम मेरे,
तुम जो करो सो ठीक है, ठाकुर मेरे।
मेरे लिए क्या भला है मैं क्या जानूँ।
तुमने जो मञ्जूर किया सो ही ठीक मानूं।

सुख दिया या दुख दिया, जो किया सो ठीक किया।
ठुकराया या प्यार किया, जो किया सो ठीक किया।
इतना तो मैं माँग लूँ, तुमको प्यार न भूलूँ।
फिर तो कोई चिन्ता नहीं, जो करो सो ठीक है॥

४

गजल

राम बिना कौन दुख हरे,
माता बिना धरम कौन धरे।
लक्ष्मी बिना आदर कौन करे,
जगदीश हरे, जगदीश हरे।
आकाश हिमालय सागर में
पृथिवी पाताल चराचर में
ये मधुर बोल गुञ्जार रहे
जगदीश हरे, जगदीश हरे।
जब कृपा दृष्टि हो जाती है
सूखी खेती हरियाती है
इस आश में जन उच्चार हरे
जगदीश हरे, जगदीश हरे॥

५

बाग सूहा—त्रिताल

चलो मन गङ्गा-यमुना तीर।
गङ्गा यमुना निर्मल पानि,
शीतल होत शरीर।
बंशी बजावत गावत कान्हो
सङ्ग लिये बलवीर।

मोर मुकुट पीताम्बर शोभे
कुण्डल झलकत हीर।
मीरां के प्रभु गिरिधर नागर
चरण कमल पर शिर।

६

भैरवी—गजल—दादरा

किस देवताने आज मेरा दिल चुरा लिया।
दुनिया की खबर न रही तनको भुला दिया॥
रहता था पास में सदा लेकिन छिपा हुआ,
करके दया दयाल ने परदा उठा लिया।
सूजर न था, न चाँद था, बिजली न थी वहाँ,
एकदम वह अजब शान का जलवा दिखा दिया॥
फिर के जो आँख खोलकर ढूँढ़न लगा उसे,
गायब था जो नजर से सोइ भीत पास पा लिया।
करके कसूर माफ मेरे जन्म जन्म के
ब्रह्मानन्द अपने चरण में मुझको लगा लिया॥

६

भगवान, मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।
दलबल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर,
तो देखते ही रहना, झट आके बचा देना।
सम्भव है झंझट में, मैं तुमको भूल जाऊँ,
पर नाथ कहीं, तुम भी मुझको न भुला देना।
भगवान, मेरी नैया उस पार लगा देना।

८

ए दिन कैसे कटे हैं जतन बताये जैयो
एहि पार गङ्गा, वही पार यमुना
बीच में मड़ैया हमारी छवाये जैयो।
अन्तर चोर कागज बनवायो
अपनि सुरतिया हियरे लिखाये जैयो।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो
बहिया पकड़ मोहे रहिया दिखाये जैयो।

९

दो दिन का जग में खेला
सब चलाचलि का मेला।
कोई चला गया है कोई जावे
कोई खड़ा है गँठरी बाँधे
कोई खड़ा तैयार अकेला॥
पाप का पेट के माया जोरी
धन लाख करोड़ कमाया
संग चले ना एक अधेला॥
माता-पिता सुनो-सुनो मेरे भैओ
अन्त का कोई साथी नहीं है
क्यों भर लिया पाप का थैला॥

■

श्री हरि-संकीर्तन

प्रार्थना

१

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिरा ज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकालकालं कृपालं, गुणागारसंसारपारं नतोऽहम् ॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं, मनोभूतकोटिप्रभा - श्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलि-कल्लोलिनी चारु-गंगा, लसद्भाल-बालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूलनिर्मूलनं मूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥
कालातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी, सदा सच्चिदानन्द-दाता पुरारी ।
चिदानन्दसंदोह - मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावत् उमानाथपादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्तिः सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भु प्रसीदति ॥

२

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम् ।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम् ॥

सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली ।
गोपस्त्री-परिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंशप्रियम् ।
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चितनुं गोगोपसंघावृतम् ।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥

३

राधाकृष्णावहं वन्दे रसरूपौ रसाश्रयौ ।
वृन्दावननिकुंजेषु नित्यलीलासमाश्रितौ ॥
ब्रह्मादिजयसंरूढ़दर्पकंदर्पदर्पहा,
जयति श्रीपतिर्गोपीरासमण्डलमण्डनः ॥

४

न नाम - सदृशं ज्ञानं, न नाम - सदृशं व्रतम् ।
न नाम - सदृशं ध्यानं, न नाम - सदृशं फलम् ॥
न नाम - सदृशस्त्यागो, न नाम - सदृशः शमः ।
न नाम - सदृशं पुण्यं, न नाम- सदृशी गतिः ॥
नारायणो महायोगी ज्ञानभक्ति-प्रदः प्रभुः ।
पीयूषवचनः पृथ्वीपावनः सत्यवाक् सहः ॥
औदुदेशजनानन्दसन्दोहामृतरूपधृक् ।
विश्वम्भराय गौराय चैतन्याय महात्मने ॥
शचीपुत्राय मित्राय लक्ष्मीशाय नमोनमः ॥

■

हनुमान चालीसा

दो०—श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वर्णउँ रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार॥
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरहुँ पवनकुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

चौ०—जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीश तिहुं लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन वरन विराज सुवेशा। कानन कुण्डल कुंचित केशा॥
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे। काँधे मूंज जनेऊ साजे॥
शंकर सुअन केशरी नन्दन। तेज प्रताप महा जगवन्दन॥
विद्यावान गुणी चातुर। रामकाज करिवे कहँ आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिवे कहँ रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे॥
लाय संजीवन लखन जियाए। श्री रघुवीर हरषि उर लाए॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावे। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा। नारद शारद सहित अहीशा॥
यम कुवेर दिगपाल जहाँते। कवि कोविद कहि सके कहाँते॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
युग सहस्र योजन जो भानु। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहु को डर ना॥
आपन तेज सँभारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै॥
नासैं रोग हरैं सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन फल पावै॥
चारौ युग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे॥
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सादर तुम रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म जन्म के दुख बिसरावै॥
अन्त काल रघुपति-पुर जाई। तहाँ जन्म हरि भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरहीं। हनुमत सेइ सर्व सुख करहीं॥
संकट कटै हटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बल बीरा॥
जै जै जै हनुमान गुसाईं। कृपा करो गुरुदेव की नाईं॥
यह शतबार पाठ कर जोई। छूटै बन्ध महासुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान-चालीसा। होइ सिद्ध साखी गौरीसा॥
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय में डेरा॥

दो०—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसो सुर भूप॥

●

आरती

आरति कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल ते गिरिवर काँपै, रोग दोष जाके निकट न झाँकै॥
अँजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सीया सुधि लाए॥
लंका ऐसो कोट समुद्र ऐसी खाई, जात पवन सुत वार न लाई।
लंका जाइ असुर सँहारे, सीता-रामजी के काज सँभारे॥
लाइ संजीवन लषन जिआए, श्री रघुवीर हर्षि उर लाए।
पैठि पताल तोरि यम का दर, अहिरावन की भुजा उखारे॥
बाईं भुजा सब असुर संहारे, दाईं भुजा सब सन्त उबारे॥
सुर-नर-मुनि सब आरती उतारैं, जय जय जय हनुमान उचारैं।
कंचन थार कपूर की बाती, आरति करत अँजनि माई॥
लंक विध्वंस कियो रघुराई, 'तुलसीदास' प्रभु कीरति गाई।
जो हनुमानजी की आरति गावै, बसि बैकुण्ठ अभय पद पावै॥

॥ आरति कीजै० ॥

प्रार्थना

१

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां,
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षज,
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी।

२

जय जनकनन्दिनि जगत-वन्दिनि जन-अनन्दिनि जानकी।
रघुवीर-नयन-चकोर-चन्दिनि बल्लभाप्रिय प्रान की॥

नव कंज-पद-मकरन्द सेवित योगिजन-मन-अलि किये।
करि पान गिनत न आन रस निर्वान सुख आनँद हिये॥

सुख-खानि मंगलदानि यह जिय जानि शरण जो आत हैं।
तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि बिकात हैं॥

ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज सुख भाषहीं।
तव कृपा-नयन-कटाक्ष-चितवनि दिवस-निशि अभिलाषहीं॥

यह दास रघुबरदास की सुखराशि पूरण कीनिए।
निज चरण कमल सनेह जनक विदेहजा वर दीजिये॥

३

श्रीरामचन्द्रकृपालु भज मन हरण भव भय दारुणम्।
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणम्॥

कन्दर्प अगनित अमित छबि नवनीलनीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम्॥

शिर मुकुट कुण्डल श्रवन चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चाप धरि संग्राम जित खरदूषणम्॥

भज दीनबन्धु दिनेश दानवदलन दुष्टनिकन्दनम्।
रघुनन्द आनँदकंद कौशलचन्द दशरथनन्दनम्॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास करु कामादि खल-दल-गंजनम्॥

४

जय जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ॥
केशवजी कल्याण गिरिधरन छबीले लाल ।
मदनमोहन श्रीवृन्दावन चन्द ॥१॥ जय०
देवकी को छैया बलभद्रजी को भैया लाल ।
जाको मुख देखेते कटत जम-फन्द ॥२॥ जय०
चतुर्भुज चक्रपाणि देवकीनन्दन देव ।
नन्द को नंदन स्वामी असुर निकन्द ॥३॥ जय०
व्रजपति व्रजराज सुरनके सारे काज ।
मुरलि धरण नैना देखते आनन्द ॥४॥ जय०
यदुपति यदुराय सन्तन सदा सहाय ।
ये ही ध्वनि गावै स्वामी परमानन्द ॥५॥ जय०

५

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥
श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो गुण गर्वीलो श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
रास-विहारिनि रस-विस्तारिनि पिय-उरधारिनि श्रीराधे ।
नव नव रंगी नवल त्रिभंगी श्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
प्राणपियारी रूप-उजारी अति सुकुमारी श्रीराधे ।
नैन मनोहर महा मोदकर सुन्दर बरतर श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥

शोभा श्रेणी सोभामौनी कोकिल-बैनी श्रीराधे ।
कीरतिवंता कामिनिकन्ता श्री भगवन्ता श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
चंदावदनी कुन्दारदनी शोभासदनी श्रीराधे ।
परम उदारा प्रभा अपारा अति सुकुमारा श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
हँसागमनी राजत रमनी क्रीड़ा कमनी श्रीराधे ।
रूप-रसाला नैन विसाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
कंचनवेली रति रस रेली अति अलवेली श्रीराधे ।
सब सुख सागर सबगुन आगर रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
रमनीरम्या तरुतरतम्या गुन आगम्या श्रीराधे ।
धाम-निवासी प्रभा प्रकाशी सहज सुहासी श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादिनि उरउन्मादिनि श्रीराधे ।
अंग-अंग टोना सरस सलोना सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
धानामिनि गुनअभिरामिनि हरिप्रिय स्वामिनि श्रीराधे ।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥

■

रामार्चा के माहात्म्य के पश्चात्

१

जनक सुता जग जननि जानकी। अतिशय प्रिय करुणानिधान की॥
ताके युग पद कमल मनाऊँ। जासु कृपा निरमल मति पाऊँ॥
गई बहोर गरीब-निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥
अस स्वभाव कहुँ सुनहुँ न देखौं। केहि खगेश रघुपति सम लेखौं॥
मोर सुधारहिं सो सब भाँती। जासु कृपा नहीं कृपा अघाती॥

२

पाई न केहि गति-पतितपावन रामभज सुन सठमना।
गनिका अजामिल व्याधि-गीध गजादि खल तारे घना॥
आभीर यवन किरात खस श्वपचादि अति अघरूप जे।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित निर्वानप्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेशते मतिमन्द तुलसीदास हूँ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ॥

दो०—मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुबीर।
अस विचारि रघुवंश मनि, हरहु विषम भवभीर॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम॥
प्रनतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारी।
गये शरण प्रभु राखि हैं, सब अपराध विसारि

श्रवण सुयश सुनि आयहुं, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि-त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुवीर।
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति राम पद, यह वरदान न आन॥
बार बार वर माँगऊँ, हर्षि देउ श्री रंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥
नहिं विद्या नहिं बाहु-बल, नहिं खरचन को दाम।
मोसे पतित अपंग की, तुम पत राखहुं राम॥

३

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

❀ ❀ ❀

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते॥
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते॥

❀ ❀ ❀

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

❀ ❀ ❀

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो-
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

❀ ❀ ❀

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम् ।
भृत्यार्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं,
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम् ।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥

❀ ❀ ❀

यः पृथिवीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवीतले रघुकुले मायामनुष्योऽव्ययः ।
निश्चक्रन्हृतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मात्वमाद्यं स्थिरां-
कीर्तिं पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥

❀ ❀ ❀

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥
नाममि रामं रघुवंशनाथं नमामि रामं श्रुतिगीतगाथम् ।
ब्रह्मास्वरूपं खलु रामचन्द्रं नमामि नौमि प्रभुरामचन्द्रम् ॥

❀ ❀ ❀

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम ।
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ।

❀ ❀ ❀

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥
माता रामौ मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

❀ ❀ ❀

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वाताऽत्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

❀ ❀ ❀

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ॥

❀ ❀ ❀

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

❀ ❀ ❀

मूकं करोति वाचालं पंगूल्लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम् ॥

❀ ❀ ❀

अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥
सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

■